वरवृद्ध नमस्ते। वीतराग विज्ञान नमस्ते। चिद्विलास धृतध्यान नमस्ते ॥ ४ ॥ स्वच्छ गुणांबुधि रत्न नमस्ते। सत्व हितंकर यत्न नमस्ते। कुनयकरी मृगराज नमस्ते। मिथ्याखग वर बाज नमस्ते ॥ ५ ॥ भव्य भवोदधितार नमस्ते। शर्मामृत सितसार नमस्ते ॥ दर्श ज्ञान सुख वीर्य नमस्ते। चतुरानन धरधीर्य नमस्ते ॥ ६ ॥ हरिहर ब्रह्मा विष्णु नमस्ते। मोहमर्द मनु जिष्णु नमस्ते। महादान महाभोग नमस्ते। महाज्ञान महयोगनमस्ते। महाउग्र तपशूर नमस्ते। महामौन गुणभूरनमस्ते। धर्मचक्र वृषकेतु नमस्ते। भवसमुद्र शत सेतु नमस्ते ॥ ८ ॥ विद्याईश मुनीश नमस्ते। इंद्रादिक नुतसीस नमस्ते। जय रत्नत्रयराज नमस्त। सकलजीव सुखदाय नमस्ते॥ ९ ॥ अशरणशरण सहाय नमस्ते। भव्यसुपंथ लगाय नमस्ते। निराकार साकार नमस्ते। एकानेक अधार नमस्ते॥१०॥ लोका लोक विलोक नमस्ते। त्रिधा सर्व गुण थोक नमस्ते। सल्ल दल्ल दल मल्ल नमस्ते। कल्लमल्लजितछल्ल नमस्ते॥११॥भुक्ति मुक्ति दातार नमस्ते। उक्ति शुक्ति शृंगार नमस्ते। गुण अनंत भगवंत नमस्ते। जै जै जै जयवंत नमस्ते॥१२

इति श्रीजिन चरणाग्रोपरिपुष्पांजलिंक्षिपेत् ॥

अथ वर्त्तमान चतुर्विंशति जिन समुच्चय पूजा प्रारभ्यते।

(वृंदावन कृत) कवित्त।

स्थापना—ऋषभ अजित संभव अभिनंदन,सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय। चंद पुहप शीतल श्रेयांस नमि,वासपूज्य पूजत सुरराय। विमल अनंत धर्म जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय॥ मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्धमान पद पुष्प चढाय॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रा अत्राऽवतरताऽवतरतसंवौषट्आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रा अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यन्त चतुर्विंशतिजिनेन्द्रा अत्रममसन्निहिताभवत भवत वषट् सन्निधीकरणम्

अथ अष्टक।

(चाल—द्यानतराय कृत नदीश्वर की)

जल—मुनिमनसम उज्ज्वलनीर, प्रासुक गंधभरा। भर कनक कटोरी धीर, दीनो धार धरा। चौवीसों श्रीजिनचंद, आनंद कंद सही। पद जजत हरत भवफंद, पावै मोक्षमही।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि महावीरान्त चतुरविंशति जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरा मृत्यु रोग विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।

चदन–गोसीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी। जिनचरनन देत चढाय, भवआताप हरी।
चौवीसों श्री जिन चंद आनंद कद सही। पद जजत हरत भव फंद, पावै मोक्ष मही।
उों ह्रीं श्री वृषभादि महावीरान्त चतुर्विशति जिनेंद्रेभ्यः संसारा ताप रोग विनाशनाय
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–तंडुल सित सोम समान, सुंदर अनियारे। मुक्ताफल की अनुमान, पुंज धरो प्यारे।
चौबीसों श्रीजिन चंद, आनद कंद सही। पद जजत हरत भव फंद पावै मोक्ष मही।
उों ह्रीं श्री वृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा

पुष्प–चरकंज कदम्ब कुरंड, सुमन सुगंधभरे। जिन अग्रधरो गुणमड, काम कलंक हरे॥
चौबीसों श्रीजिन चन्द, आनन्द कन्द सही। पद जजत हरत भव फंद, पावै मोक्ष मही॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेंद्रेभ्य· कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–मन मोदन मोदक आदि, सुंदर स्वच्छ बने। रसपूरत प्रासुक स्वाद जजत क्षुधादि हने।
चौबीसों श्री जिन चंद,आनंद कंद सही। पद जजत हरत भव फंद,पावै मोक्ष मही।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेंद्रेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

दीप–तम खंडन दीप जगाय, धारो तुम आगे। सब तिमिर मोह छैजाय, ज्ञानकला जागे।
चौवीसों श्रीजिन चन्द, आनन्द कन्द सही। पद जगत हरत भव फंद, पावै मोक्ष मही॥

ऊँ ह्रीं श्री वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनायदीपंनिर्वपामीति स्वाहा

धूप-दशगंध हुताशन मांहि, मैं प्रभु खेवतहूं। मिसि धूम करम जरजाय, तुमपद सेवतहूं।
चौबीसों श्री जिन चन्द आनन्द कन्द सही। पद जजत हरत भव फंद पावै मोक्ष मही॥
ऊँह्रींश्री वृषभादि महावीरान्तचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्योऽष्टकर्म दहनाय धूपंनिर्वपामीतिस्वाहा

फल-शुचिपक्व सरस फलसार, सब ऋतुके लायो। देखत दृग मनको प्यार, पूजत सुख पायो।
चौबीसों श्री जिन चन्द, आनन्दकन्द सही। पद जजत हरत भव फन्द, पावै मोक्ष मही॥
ऊँ ह्रीं श्री वृषभादि महावीरान्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करूं। तासों अरचूं सुखकार, भवतर मोक्ष वरूं॥
चौबीसों श्री जिनचद आनन्द कंद सही। पद जजत हरत भव फंद पावै मोक्ष मही॥
ऊँह्रींश्री वृषभादिमहावीरान्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ-श्रीमत तीरथ नाथपद, माथनाय हित हेत। गावूं गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत॥१॥

घत्ताछंद-जय भवतम भंजन जनम निकंजन रंजन दिन मन स्वच्छकरा। शिवमग परकाशक अरिगण नाशक, चौबीसों जिनराजवरा॥ २॥

छंद पद्धड़ी ॥ जय ऋषभदेव ऋषिगण नमंत। जय अजितजीत वसु अरि तुरंत। जय संभव भव भय करत चूर। जय अभिनंदन आनंदपूर॥ ३ ॥ जय सुमति सुमतिदायक दयाल। जय पद्म पद्म दुति तन रसाल। जय जय सुपार्श्व भवपाश नाश। जय चंद्र चंद्रतन दुति प्रकाश॥ ४ ॥ जय पुष्पदंत दुति दंतसेत। जय शीतल शीतल गुणनिकेत। जय श्रेयनाथ नुतसहस भुज्य। जय वासव पूजत, वासु पूज्य॥ ५ ॥ जय विमल विमलपद देनहार। जय जय अनंत गुण गण अपार। जय धर्म धर्मशिव शर्मदेत। जय शांति शांति पुष्टि करेत॥६॥ जय कुंथ कुंथआदिक रखेय। जय अर जिन वसुअरि क्षय करेय। जय मल्लि मल्लहत मोह मल्ल। जय मुनिसुव्रत व्रत सल्लदल्ल।७। जय नमि नित वासव नुत सप्रेम। जय नेमिनाथ वृषचक्र नेम। जय पारसनाथ अनाथनाथ। जय वर्धमान शिव नगर साथ॥

घत्ता छन्द-चौबीस जिनंदा आनंद कंदा, पाप निकंदा सुखकारी। तिन पद युग चंदा उदय अमंदा, वासव बंदा हितधारी॥ ९ ॥

ॐह्रींश्रीवृषभादिमहावीरान्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये महार्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

अथ आशीर्वाद। (सोरठा)

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराज वर। तिनपद मन वचधार, जो पूजै सो शिवलहै॥१०।
इत्याशीर्वादः। इति श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर समुच्चय पूजा संपूर्णा॥

१ अथ श्रीऋषभदेवजिन पूजा लिख्यते।

(वृन्दावन कृत) अडिल।

स्थापना—परम पूज्य वृषभेश स्वयंभू देवजू। पिता नाभि मरु देवि करैं सुर सेवजू॥
कनक वरण तनतुंग धनुष पनसत तनो। कृपासिंधु इत आय तिष्ट मम दुख हनो ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेव जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। छंद द्रुतविलंवित

जल—हिमवनोद्भव वारि सुधारिके। जजतहूं गुण बोध उचारिके॥ परमभाव सुखोदधि दीजिये। जन्म मृत्यु जरा क्षयकीजिये। ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन—मलय चंदन दाह निकंदनं। घस उभै कर मैं कर वंदनं। जजतहूं प्रसमाश्रम दीजिये। तपत-ताप त्रिधा क्षय कीजिये॥ ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–अमल तंडुल खंडविवर्जितं। सित निशेश हिमामय तर्जितं। जजतहूं तसु पुंज धरायजी।
अखयसंपत्ति दो जिनराय जी। उों ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–कमल चंपक केतुकि लीजिये। मदन भंजन भेट धरीजिये। परमशील महा सुखदाय हैं। समर शूल निमूल नसाय हैं॥ ॐ ह्रीं श्री ऋषभ देव जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

नैवेद्य–सरसमोदन मोदक लीजिये। हरनभूख जिनेश जजीजिये। सकल आकुल अंतक हेतु है। अतुल शांति सुधारस देतु है॥ ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दीप–निवड मोह महातम छाईयो। स्वपरभेद न मोहि लखाईयो। हरन कारन दीपक तासके। जजतहूं पदकेवल भासके॥ ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–अगरचंदन आदिक लेयके। परम पावन गंध सुखेय के। अगनि संगजरैं मिस धूमकै। सकल कर्म उडैं बहु घूमके॥ उों ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–सुरस पक्र मनोहर पावने। विविधि ले फल फूल रचावने। त्रिजगनाथ कृपा अब कीजिये। हमैं मोक्षमहाफल दीजिये॥ ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

अर्घ–जलफलादि समस्त मिलायके। जजतहू पद अर्घ चढायके। भगतवत्सल दीनदयाल जी। करहु मोहि सुखी लख हालजी॥ ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। छंद द्रुतविलंबित।

गर्भ–असित दोयज साढ सुहावनी। गरभ मंगलता दिन पावनी। हरिशची पितु मातहि सेवही। जजतहैं हम श्री जिनदेवही॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेव जिनेन्द्राय आषाढ कृष्ण दोयज गर्भ कल्याणकाय अर्घ निर्वपामीतिस्वाहा

जन्म–असित चैत सुनौमि सुहाईयो। जनम मंगल तादिन पाईयो। हरि महागिर पै जजियो तबै। हम जजैं पद पंकजको अबै॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण नवमी जन्म कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

तप–असित नौमी सुचैत धरैसही। तप विशुद्ध सबै समता गही। निज सुधारस सो लवलाईयो। हम जजैं पद अर्घ चढाइयो॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेव जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण नवमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा.

ज्ञान–असितफागुण ग्यारस सोहनो। परम केवलज्ञान जगोभनो। हरि सबै सुर पूजत आयके। हम जजैं इत मंगल गायके ॥ ४ ॥

ॐ ह्रींश्रीऋषभदेव जिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्ण एकादशी ज्ञान कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

निर्वाण–असित चौदस माघ विराजई। परम मोक्षलियो जिनराजई। हरि समूह जजै कैलासजी। हम जजैं अतिधार हुलासजी ॥ ५॥

ॐ ह्रींश्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय माघ कृष्ण चतुर्दशीमोक्षकल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला। घत्ताछन्द।

महाअर्घ–जय जय जिनचंदा आदिजिनंदा, हरि भवफंदा कंदाजू। वासव शतबंदा धर आनंदा, ज्ञान अमंदा नंदाजू ॥ १ ॥

छंद मोतीदाम।

त्रिलोक हितंकर पूरण पर्म। प्रजापति विष्णु चिदातम धर्म। यतीश्वर ब्रह्म विदांबर बुद्ध। वृषंक असंख कृपांबुधि शुद्ध ॥ २ ॥ जबै गर्भागम मंगल जान। तबै हरिहर्ष हिये अति आन ॥ पिता जननी पद सेव करेय। अनेक प्रकार उमंग भरेय ॥ ३ ॥ जये जबही तबही हरिआय। गिरींद्रविषै कियो न्हौनसु जाय। नियोग समस्तकियो तितसार। सुलायप्रभू पुन राज अगार ॥ ४॥पिता करसौंप

कियो तितनाट। अमंद अनंद समेत विराट। सुथान पयान कियो फिर इंद्र। इहां सुर सेव करैं जिन चंद्र ॥ ५॥ कियो चिरकाल सुखाशितराज। प्रजा सबआनंदको नितसाज। सुलिप्त सुभोगन में लख योग। कियो हरिने यह उत्तम योग ॥६॥ निलंजन नाच रच्यो तुमपास। नवोरस पूरित भाव विलास। बजैं मिरदंग द्रमं द्रम जोर। चलै पगझार झना झन झोर ॥ ७॥ घनाघन घण्ट करैं ध्वनि मिष्ट। बजैं मुहचंग सुरान्वित सुष्ट। खडी छिनपास छिनेहीअकाश। लघूछिन दीरघ आदि विलास ॥ ८ ॥ ततछिन तोहि विले अवलोय। भए भवतैं भयमीत वहोय। सुभावत भावन बारह भाय। तहां दिव ब्रह्म ऋषीश्वर आय ॥ ९॥ प्रबोधि जिनेशगए निजधाम। तबैंहरिआय रची शिविकाम। कियो कचलौंच प्रयाग अरन्य। चतुर्थम ज्ञान लह्यो जग धन्य।१०।धरो जबयोग छमास प्रमान। दियो श्रेयांस तिन्हें इषु दान। भयो जब केवल ज्ञान, जिनिन्द। समो स्रन ठाठ रच्यो सुधनिन्द ॥११॥ तहां बृषतत्व प्रकाश अशेश। कियो फिर निर्भय थान प्रवेश। अनंत गुणातम श्री सुखरास। तुमैं नित भव्य नमें शिवआस

घत्ता छन्द–यह अरज हमारी सुन त्रिपुरारी, जनम जरा मृत दूरकरो। शिवसंपति दीजे ढीलन कीजे, निज लखलीजे कृपा धरो ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेव जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय, अनर्घपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वाद–आर्या छन्द। जो ऋषभेश्वर पूजें, मन वच काय शुद्धकर प्राणी। सो पावैं निश्चैसै, मुक्त भुक्तिसार सुखदानी ॥ ४ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ इतिश्री ऋषभ देव तीर्थंकर पूजा सपूर्णा।

२ अथ श्रीअजितनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(वृन्दावनकृत)। सवैया वा छंद अशोक पुष्पमंजरी।

स्थापना–त्याग वैजयंत सार सारधर्म के आधार, जन्मधार धीर नम्र श्रेष्ट कौशलापुरी । अष्टदुष्ट नष्टकार मात वैजया कुमार, आयु पूर्वलक्ष दक्ष है वहत्तरे पुरी । ते जिनेश श्रीमहेश शत्रुके निकंदनेश, अत्र हेरिये सुदृष्ट भक्तपै कृपापुरी ॥ आय तिष्ट इष्टदेव मैं करूं पदाब्जसेव, पर्म शर्म दाय पाय आप शर्नआपुरी ॥

उों ह्रीं श्री अजित नाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक। छंद त्रिभंगी, अनुप्रयासक ॥

जल–गंगाद्रह पानी निर्मल आनी, सौरभसानी सीतानी। तसु धारत धारा त्रिषा निवारा, संतागारा सुखदानी। श्री अजित जिनेशं नुतनाकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं। मनवांछित दाता त्रिभुनत्राता, पूजूं ख्याता जग्गेशं ॥ उों ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन–शुचि चंदन बावन ताप मिटावन, सौरभ पावन घसल्यायो। तुम भवतप भंजन हो शिव रंजन,
पूजनमंजन मैं आयो। श्री अजितजिनेशं नुतमाकेशं चक्रधरेशं खग्गेशम्। मनवांछित दाता
त्रिभुवनत्राता, पूजूं ख्याताजग्गेशम्। ऊँ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,
निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्तायसंसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत– सितखंड विवर्जित निशिपतितर्जित, पुंजविधर्जित तंदुलको। भव भाव निखर्जित शिवपद
सर्जित, आनंद भर्जित दंदलको। श्री अजितजिनेशं नुतनाकेशं, चक्र धरेशं खग्गेशम्। मन-
वांछितदाता त्रिभुवनत्राता पूजूं ख्याता जग्गेशम्। ऊँ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रायगर्भ, जन्म,
तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–मनमथ मदभंजन धीरज ग्रन्थन, ग्रंथ निग्रन्थ निग्रथंपती। तुम पादको सेसै, धार असेसै, आदिको
सेसै अर्चपती। श्रीअजित जिनेशं नुतना केशं चक्रधरेशं खग्गेशम्। मनवांछितदाता त्रिभुवन
त्राता, पूजूं ख्याता जग्गेशम्। ऊँ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,
निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–आकुल कुल वारन थिरता कारन, क्षुधा विदारन चरुलायो। षट रस कर भीने अन्न नवीने,
पूजन कीने सुख पायो॥ श्री अजितजिनेशं नुतमाकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशम्। मनवांछितदाता
त्रिभुवनत्राता पूजूं ख्याता जग्गेशम्। ऊँ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,

निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यंनिर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप—दीपक मणिमाला जोत उजाला, भर कन थाला हाथलिया। तुम भ्रम तम हारी शिव सुखकारी, केवलधारी पूजकिया। श्री अजितजिनेशं नुतनाकेशं। चक्रधरेशं खग्गेशम्। मनवांछितदाता त्रिभुवन त्राता, पूजूं ख्याता जग्गेशम्। ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप—अगरादिक चूरन परिमल पूरन, खेवत कूरन करम जरैं। दशहूं दिशि ध्यावत हर्ष बढावत, अति गुण गावत नृत्य करैं। श्री अजितजिनेशंनुतनाकेशं,, चक्रधरेशं खग्गेशम्। मनवांछित दाता त्रिभुवनत्राता, पूजूं ख्याता जग्गेशम्। ओं ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल—बादाम नरंगी श्रीफल चंगी, आदि अभंगी सो अरचूं। सब विघ्न विनाशै सुख परकाशै, आतम भाशै भव विरचूं। श्री अजित जिनेशं नुतनाकेश चक्रधरेशं खग्गेशम्। मनवांछित दाता त्रिभुवनत्राता, पूजूं ख्याता जग्गेशम्। ओं ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ—जल फल सब सज्जे बाजत बज्जे, गुणगण रज्जे मन मज्जे। तुम पद युग मज्जे सज्जनजज्जे, ते भव भज्जे निज कज्जे। श्री अजितजिनेशं नुतमाकेशं, चक्र धरेशं खग्गेशम्। मनवांछित दाता

त्रिभुवन त्राता पूजूं ख्याता जग्गेशम्। ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक।

छंद द्रुतिमध्यक।

गर्भ–जेठअसेत अमावस सोहे। गर्भदिनानंदसो मन मोहे। इंद्र फनीद्र जजैं मनलाय। हम पद पूजत अर्घ चढाय ॥ १ ॥

ॐह्रींश्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्णअमावस्या गर्भ कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–माघशुदी दशमी दिन जाए। त्रिभुवन मे अति हर्ष बढाए। इंद्र फनिंद्र जजैं तित आय। हम इत सेवत मन हुलसाय ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय माघशुक्ल दशमी जन्म कल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

तप–माघशुदी नवमी तपधारा। भवतन भोग अनित्य विचारा। इंद्र फनींद्र जजैं तित आय। हम पद पूजैं हैं सिरनाय ॥ ३ ॥

ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय माघशुक्ल नवमी तप कल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–पौष शुकल ग्यारस शुभदाय। त्रिभुवन भान सुकेवल पाय। इंद्र फनींद्र जजैं तित आय। हम पद पूजैं प्रीत लगाय ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय । पौष शुक्ल एकादशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा
निर्वाण–पंचमि चैत्रशुदी निरवाण । निजगुण राजलियो भगवान । इंद्र फनींद्र जजैं तितआय। हमपद
पूजैं हैं मुणगाय।५। ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय चैत्रशुक्लपंचमी मोक्षकल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–अष्ट दुष्टको नष्टकर, इष्ट मिष्ट निजपाय। सिष्टधर्म भाखो हमैं, पुष्ट करो जिनराय ॥१॥

छंद पद्धडी। जय अजितदेव तुम गुण अपार। मैं कहूं कछुक लघुबुद्धि धार। दश जन्मत अतिशय बल अनंत। शुभ लक्षण मधुर वचन भनंत ॥ २ ॥ संहनन प्रथम मल रहित देह। तन सौरभ श्रोणित श्वेत जेह। वपु स्वेदविना महरूप धार। समचतुर धरैं संठाण सार॥ ३॥ दश केवल गमन आकाश देव। सुरभिक्ष रहैं योजन शतेव। उपसर्ग रहित जिनतन सुहोय। सबजीव रहित बाधा सुजोय। मुखचार सर्वविद्या अधीश। कवला अहार वर्जित गरीश। छाया बिन नखकच बढै नाहिं। उन्मेष टमकनहि भ्रुकुटिमाहिं॥५॥सुरकृत चौदह अतिशय बखान। सबजीव मित्रता भावजान। कटक बिन दर्पन वत सुभूम। सब धान्य वृक्षफल रहै झूम। ॥६॥ षटऋतुके फूल फले निहार। दिशि निर्मल जियआनंद धार। जय शीतल मंद सुगंध वाय। पद पंकजतल पंकज रचाय॥७॥मल रहित गगन सुरजै उचार। वरषा गंधोदक होतसार। वर धर्मचक्र आगै चलाय। वसु मंगल द्रव्य धरे बनाय॥८॥ सिंहासन छत्र चमर सुहाय। भा मंडल छबि वरनी न जाय। तरु उच्च अशोकरु पुष्पवृष्टि। ध्वनि दिव्य और

दुंदुभी मिष्ट ॥९॥ दृगज्ञान शर्म वीरज अनंत। गुण छियालीस इम तुमलहंत। इन आदि अनंते सगुण धार। बरनत गणपति नहि लहत पार।१०। तुम समोसरण मह इंद्र आय। पदपूजत वसुविधि द्रव्यलाय। अति भक्ति सहित नाटक रचाय। ताथेइ थेइ धुनि रहीछाय॥ ११॥ पगनूपुर झननन झनननाय। तननन तननन तानगाय। घननननननन घंटा घनाय। छम छम छम छम घुघरू बजाय॥ १२॥ टम टम टम टम मुरज ध्वान। संसाप्रदि सारंग भरत तान। झट झट झट अट पट नटत नाट। इत्यादि रच्यो अद्भुत सु ठाठ॥ १३॥ पुनि वंद इंद्र नुत थुति करंत। तुमहो जगमें जयवत संत। फिर तुम विहार कर धर्मवृष्टि। सब योग निरोधो परमदृष्टि॥ १४॥ सम्मेदथकी लिय मुक्तिथान। जय सिद्ध शिरोमणि गुणनिधान। वृंदावन वंदत वार वार। भव सागरते मोहि तार तार॥ १५॥

घत्ताछन्द। जै अजित कृपाला गुणमणि माला, संयमसाला बोधपती॥ वर सुजस उजाला हीरहि माला ते अधिकाला स्वच्छ अती॥ १६॥ ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वाद (छंद मदावलिप्त)

जो जन आजत जिनेश जजैहैं मन वचकाई। ताको होय अनंत ज्ञान सम्पति सुख दाई।
पुत्र मित्र धन धान्य सुजस त्रिभुवनमे छावैं। सकल शत्रु क्षयजांहि अनुक्रम सो शिव पावैं।

॥ इत्याशीर्वादः ॥ इति श्रीअजितनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ २॥

३ अथ श्रीसंभवनाथजिनं पूजा लिख्यते।

॥ वृन्दावनकृत । छंद मदावलिप्त कपोल ॥

स्थापना–जय संभव जिनचंद सदा हरिगण चकोर नुत । जयसेना जसुमात जयतराजा जितारि सुत ॥
तज ग्रीवक ले जन्म नगर सावित्री आई । सो भव भंजन हेत भगत पर होऊ सहाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक । छंद चौबोल । (ख्याल) ॥

जल–मुनिमन सम उज्वल जल लेकर, कनक कटोरीमे धारा । जनम जरा मृत नाश करनको, तुम पदतर डारूं धारा ॥ संभव जिनके चरन चरचते, सब आकुलता मिटजावे । निजनिधि ज्ञान दरश सुख वीरज, निराबाध भविजन पावे ॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन–तपत दाहको कंदन चंदन मलयागिरको घसलायो । जगवंदन भौ फंदन खंडन समरथ लख शरने आयो ॥ संभव जिनके चरण चरचते सब आकुलता मिटजावे । निज निधि ज्ञान दरश

सुख वीरज, निराबाध भविजन पावै ॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–देवजीर सुखदास कमलवासित सित सुन्दर अनियारे । पुंजधरूं जिन चरनन आगे लहू अखै पद को प्यारे ॥ संभव जिनके चरण चरचते सब आकुलता मिटजावै । निज निधि ज्ञान दरश सुख वीरज निराबाध भविजन पावै ॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–कमल केतुकी बेल चमेली चंपा जुइ जु सुमन वरा । तासूं पूजत श्रीपति तुम पद मदनबाण विध्वंस करा ॥ संभव जिनके चरण चरचते सब आकुलता मिटजावै । निज निधि ज्ञान दरश सुख वीरज निराबाध भविजन पावै ॥ ॐ ह्रीं श्री संभवनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–घेवर बावर मोदन मोदक खाजा ताजा सरस बना । तासोंपद श्रीजिनको पूजत क्षुधारोग तत्काल हना ॥ संभव जिनके चरण चरचते सब आकुलता मिटजावै । निज निधि ज्ञान दरश सुख वीरज निराबाध भावजन पावै ॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप–घटपट परकाशक घनतमनाशक तमढिग ऐसो दीप धरूं । केवल जोत उद्योत होऊ मो यही

सदा अरदास करूं॥ संभव जिनके चरण चरचते सब आकुलता मिटजावै। निज निधि ज्ञान दरश सुख वीरज निराबाध भविजन पावै॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप—अगर तगर कृष्णागर श्रीखंडादिक चूर हुतासनमे। खेवतहूं तुम चरण जलजढिग करमछार जर हुए छिनमे॥ संभव जिनके चरण चरचते सब आकुलता मिटजावै। निज निधि ज्ञान दरश सुख वीरज निराबाध भविजन पावै॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल—श्रीफल लौंग बदाम छुहारा एला पिस्ता दाखरमैं। ले फल प्रासुक पूजूं तुम पद देऊ अखेपद नाथ हमैं॥ संभव जिनके चरण चरचते सब आकुलता मिटजावै। निज निधि ज्ञान दरश सुख वीरज निराबाध भविजन पावै॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ—जल चंदन तंदुल प्रसून चरु दीप धूप फल अर्घ किया। तुम को अरपूं भाव भगति धर जै जै जै शिव रमन पिया॥ संभव जिनके चरण चरचते सब आकुलता मिटजावै। निज निधि ज्ञान दरश सुख वीरज निराबाध भविजन पावै॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक (छंदहंसी)

गर्भ–माता गर्भ विषे जिनआय। फागुणसित आठैं सुखदाय॥ सेयो सुरतिय छप्पन वृंद। नानाविधि मैं जजूं जिनिंद॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय फाल्गुण शुक्ल अष्टमी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–कातक सित पूनम तिथिजान। तीन ज्ञानयुत जन्म प्रमान॥ धर गिरराज जजे सुर राज। तिन्हें जजूं मैं नितहित काज॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–मगसिर सित पून्यों तप धार। सकल संग तज जिन अनगार॥ ध्यानादिक बल जीते कर्म। चरचूं चरन देऊ शिवशर्म॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मार्ग शिर शुक्ल पूर्णिमा तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–कार्तिक कलतिथि चौथ महान। घाति घात लिय केवल ज्ञान॥ समवसरण में तिष्टे देव। तुरिय चिह्न चरचूं वसुभेव॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय कार्तिक कृष्ण चतुर्थी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–चैत शुकल तिथि षष्टी घोष। गिरि समेदतें लीनो मोष॥ चार शतक धनु अवगाहना।

जजूं तासपद थुतिकर घना ॥ ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल षष्ठी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। (दोहा)

महाअर्घ–श्रीसंभवके गुण अगम, कहि न सकत सुरराज। मैं वश भगतिसु धीठ है, विनवूं निजहितकाज ॥

छंद मोतीदाम–जिनेश महेश गणेश गरिष्ठ। सुरासुर सेवित इष्ट वरिष्ठ ॥ धरे वृषचक्र करे अघचूर। अतत्त्व क्षपातम मर्द्दनसूर ॥ सुतत्त्व प्रकाशन शासन शुद्ध। विवेक विराग बढावन बुद्ध ॥ दयातरु तर्पन मेघमहान। कुनयगिरि गंजन वज्रसमान ॥ सुगर्भरु जन्म महोत्सव मांहि। जगज्जन आनंदकंद लहाहि ॥ सो पूरव साठहि लक्षजु आय। कुमार चतुर्थम अंस रमाय ॥ चवालिस लाखसु पूरव एव। निकंटक राज कियो जिनदेव ॥ तजो कछु कारनपाय सुराज। धरे व्रतसंयम आतमकाज ॥ सुरेंद्र नरेंद्र दियो पय दान। धरे वनमें निज आतम ध्यान ॥ कियो चवघाति कर्म विनाश। लियो तब केवल ज्ञान प्रकाश ॥ भए समवश्रुत ठाठ अपार। खिरे धुनि झेलहि श्रीगणधार ॥ भने षट द्रव्य तने विस्तार। चहू अनुयोग अनेक प्रकार ॥ कहे पुन त्रेपन भाव विशेष। उभय विधि हैं उपसमजु भेष ॥ सु सम्यक् चारित्र भेद सरूप। अबै इम छाइक नो सुअनूप ॥ ८ ॥ दगौ बुधि सम्यक चारित दान। सु लाभरु भोगुप भोग प्रमाण ॥ सुवीरज संयुत ए नव जान। अठारह छयोपसम इममान ॥ ९ ॥ मति श्रुति अवधि उभैविध जान। मनपरजै चक्षु और प्रमान ॥ अचक्षु तथावधि दानरुलाभ। सुभोगुप

भए वसु एक भोगरु वीरज लाभ ॥ १० ॥ व्रताव्रत संयम और सुधार । धरे गुण सम्यक चारित भार ॥ चहूंगत चार कषाय तिवेद । छः लेश्या और सभापति एह । इकीस उदीक सुनो अब जेह ॥ ११ ॥ असिद्धत ओर अतत्व कहांहि ॥ १२ ॥ भए एकवीस अज्ञान विभेद ॥ असंयमभाव लखो इसमाहि । सुजीवित भव्यत ओर अभव्य । तरेपन येम भने जिन सुनो अब और । विभेद त्रय परिणाम कठोर ॥ कहो इन आदि लहो फिर सव्व ॥ १३ ॥ तिन्होंमें कितेक त्यागन जोग । कितेक गहै सुमिटे भवरोग ॥ प्रभू हमको भवसागर तार । मोख । आनंतगुणातम मंडित चोख ॥१४॥ जजूं तुम पाय जपूं गुणसार । गहि शरणागत दीनदयाल । विलंब करो मत हे गुणमाल ॥ १५ ॥

घत्ताछन्द–जै जै भवभंजन मुनिमन रंजन दया धुरंधर कुमति हरा ॥ वृंदावन वंदत मन आनंदत दीजे आतम ज्ञान वरा ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ आशीर्वाद । छंद अडिल–जो वाचैं यह पाठ सरस संभव तनो । सो पावैं धनधान्य सरस संपति घनो ॥ सकल पाप छै जाय सुजस जगमें बढै । पूजत सुरपद होय अनुक्रम शिव चढै ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वादः । इति श्रीसंभवनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥३॥

४ अथ श्रीअभिनन्दन नाथ जिन पूजा प्रारभ्यते।

(वृन्दावनकृत) छंद मदावलिप्तकपोल ॥

स्थापना–अभिनंदन आनंदकंद सिद्धारथ नंदन। संवर पिता दिनंदचंद, जिहि आवत वंदन॥
नगर अयुध्या जनम, इंद्र नागेंद्रजु ध्यावें। तिनें जजनके हेतु, थाप हम मंगल गावें ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ओं ह्रीं श्री अभिनन्दनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ओं ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। छंद गीता।

जल–पद्मद्रहगत गंगचंग,अभंग धारसुधारहै। कनकमणि गणजडित,झारीद्वारधारनिकार है। कलुषताप निकंद,श्रीअभिनंदअनुपमचंदहै। पदवंद वृंदजजैप्रभू,भवदंदफंद निकंद है॥ ओंह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तायजन्म मृत्युजरा रोगविनाशनाय जलं०

चन्दन–शीत चंदन कदलि नंदन, सुजल संग घसायकै। ह्वै सुगंध दशों दिशामें, भ्रमै मधुकर आयके। कलुषतापनिकंद श्री अभिनंद अनुपम चंदहै। पद बन्द वृन्द जजै प्रभू भवदन्द फन्द निकन्द है।
ओं ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत–हीर हिम शशिफेन मुक्ता, सरस तंडुल सेत है। तासको ढिग पुंज धारूं, अखै पदके हेत है।
कलुष ताप निकंद श्री अभिनंद अनुपम चंद है। पद वन्द वृन्द जजै प्रभू भवदंद फद निकन्द है।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–समर सुभट मिटन कारण, सुमन सुमन समानहै। सुरभिते जापै करै, झंकार मधुकर आन है।
कलुषताप निकंद श्री अभिनंद अनुपम चंद है। पद वन्द वृन्द जजै प्रभू भवदंद फंद निकन्द है।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–सरस ताजे नव्य गव्य, मनोग चित हरलेयजी। छुधाछेदन छिमा छितिपतिके, चरन चरचेयजी।
कलुषताप निकंद श्री अभिनंद अनुपम चंद है। पदवन्द वृन्द जजै प्रभू भवदंद फन्द निकन्द है।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–आतम तम मर्दन किरन, वरबोध भानु विकाश है। तुम चरनढिग दीपकधरूं, मोहिहोउ सुपर-प्रकाश है। कलुषताप निकंद श्री अभिनंद अनुपम चंद है। पदवन्द वृन्द जजै प्रभू भवदंद फंद निकन्द है। ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रायगर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच-

कल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप–भूर अगर कपूर चूर, सुगंध अगनि जराय है। सब करम काष्ट सुकाष्टमें, मिस धूप धूम उडाय है।
कलुषताप निकंद श्रीअभिनंद अनुपम चंद है। पद वन्द वृन्द जजे प्रभू भवदंद फंद निकन्द है ॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल–आंब निंबू सदा फलादिक, पक पावन आनजी । मोक्ष फलके हेतु पूजूं, जोर के युग पानजी ।
कलुषतापनिकंद श्री अभिनंद अनुपम चंद है। पदवन्द वृन्दजजे प्रभू भवदंद फंद निकन्द है।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ–अष्ट द्रव्य समार सुंदर, सुजस गाय रसाल ही । नचत रचत जजूं चरणयुग नायनाय सुभालही ।
कलुषताप निकंद श्री अभिनंद अनुपम चंद है । पद वन्द वृन्द जजे प्रभू भवदंद फंद निकन्द है ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंच कल्याणक (छन्द हरिपद)

गर्भ–शुकल छट वैशाख विषे तज, आए श्रीधरदेव । सिद्धारथ माताके उदरमें करैं शची शुचि सेव ।

रतन वृष्टि आदिक वरमंगल, होत अनेक प्रकार। ऐसे गुणनिधिको मैं, पूजूं ध्यावूं बारंबार ॥१॥
ॐह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल षष्टी गर्भ, कल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म—माघशुकल तिथ द्वादशके दिन, तीन लोक हितकार। अभिनंदन आनन्द कन्दतुम लीनों जग अवतार।
एक महूरत नरक मांहिहू, पायो सबजिय चैन। कनकवरन कपि चिन्ह धरन, पद जजूं तुम्हें दिनरैन॥२॥
ॐ ह्रींश्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय माघशुक्ल द्वादशी जन्म कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा

तप—साढे छत्तिस लाख सुपूरव, राजभोग वरभोग। कछु कारण लख माघशुक्ल, द्वादशिको धारो योग।
षष्टम नेम समापत करलिये, इंद्रदत्तघर छीर। जय धुनि पुष्प रतन गंधोदक, वृष्टि सुगध समीर।३।
ॐह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय माघशुक्ल द्वादशी तप कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा

ज्ञान—पौष शुक्ल चौदस को घाते, घाति करम दुखदाय। उपजायो वरबोध जासको केवलिनाम कहाय।
समवसरण लहि बोध धरम कहि भव्यजीव सुखकंद। मोको भवसागरते तारो जैजैजै अभिनंद ४
ॐह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय पौषशुक्लचतुर्दशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

निर्वाण—योगनिरोध अघाति घात लहि गिर समेदतें मोख। मास सकलसुखरास कहेवैशाखशुक्लछठचोख।
चतुरनिकाय आय तितकीनो भगति भाव उमगाय। हम पूजैं इत अर्घलेयजिमि विघन सघन मिटजाय
ॐह्रींश्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय वैशाखशुक्ल षष्टी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–तुंग सुतन धनु तीनसो,अरु पचास सुख धाम। कनक वरन अवलोकिकै,पुनि पुनि करूं प्रणाम१
छंद लक्ष्मीधरा–सच्चिदानंद सज्ञान सदसरनी। सत्सरूपा लई सत्सुधा सरनी। सर्व आनंदकंदा महा देवता। जास पदाब्ज सेवैं सदा देवता ॥२॥ गर्भ औ जन्म निःकर्म कल्याण में। सत्वको शर्मपूरै सबे थानमें। वंश इक्ष्वाकमें आप ऐसे भए। ज्यों निशा सर्दमैं इंदु स्वच्छे ठये ॥३॥ होत वैराग्य लोकांतसुर बोधियो,फेर शिविका सुचढि गहन निज सोधियो। घाति चौघातिज्ञान केवल भयो। समवसर्णादि धन देव तब निर्मियो ॥४॥ एक है इंद्र नीली शिला रत्नकी। गोल साढेदसे योजने जत्न की। चार दिश पैडिका वीस हज्जारहैं। रत्नके चूरका कोट निरधारहैं।५। कोट चहूं ओर चहूंद्वार तोरनखचें। तास आगे चहूं मानथंबा रचे॥ मान मानी तजै जास ढिग जायके। नम्रताधार सेवे तुमें आयके॥ ६॥ बिंब सिंहासनों पर तहां सोह ही। इंद्र नागेंद्रके ते मने मोह ही। वापिका वारिसो जत्र सोहै भरी,। जासमें न्हातही पापजावै टरी। ७। तास आगै भरी खातिका वारिसों। हंस सूवादि पक्षी रमें प्यारसो। पुष्प की वाटिका वाग वृक्षे जहां। फूल औ श्री फलैं सर्वहीहैं तहां। ८। कोट सोवर्ण का तास आगे खडा, चार दरवाजे चौ ओर रत्नों जडा। चार उद्यान चारों दिशामे गिना। है ध्वजापंक्ति औ नाटशालाबना।९। तास आगे तृतीकोट रूपा मई। तूपनो जास चारों दिशामें ठई। धाम सिद्धांत धारीनके हैं जहां।

औ सभाभूमि हैं भव्यतिष्ठें तहां ॥ १० ॥ तासु आगे रची गंधकूटी महा। तीन हैं कट्टनी सार शोभा लहा। एक पै तो निधेही धरी ख्यात हैं। भव्य प्राणी तहांलो सबै जात हैं॥ ११ ॥ दूसरी पीठपैं चक्र धारी गमैं। तीसरी प्रातिहार्य लसैं भागमैं। तासपै वेदिका चार थंभानकी। है बनी सर्व कल्याणके खानकी॥ १२ ॥ तासपै हैं सुसिंहासनं भासनं। जासपै पद्म प्राफुल्ल हैं आसनं। तासुपै अंतरीक्षं विराजैं सही। तीन छत्रे फिरैं सीस रत्ने यही ॥ १३ ॥ वृक्ष शोकापहारी अशोके लसैं। दुंदुभी नाद औ पुष्पखंते खसैं। देहकी जोतसों मंडलाकार है। सात भव भव्य तामें लखैं सारहै ॥ १४ ॥ दिव्यबानी खिरे सर्वशंका हरैं। श्रीगणाधीश झेलैं सु शक्ती धरैं। धर्मचक्री तुही कर्मचक्रीहनैं। सर्व शक्री नमैं मोद धारैं घनैं ॥ १५ ॥ भव्यको बोध सम्मेदतें शिव गए। तत्र इंद्रादि पूजैं सुभक्ती मए। हे कृपासिंधु मोपै कृपा धारिए। घोर संसारतें शीघ्र मो तारिए ॥ १६ ॥

घत्ता छन्द–जै जै अभिनंदा आनंदकंदा, भवसमुद्र वरपोत इवा। भ्रमतम सत खंडा भानु प्रचंडा, तार तार जग रैनदिवा ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द–अथ आशीर्वाद श्री अभिनंदन पाप निकंदन, तिन पद जो भवि जजैं सुधार। ताके पुन्य भानु वर जगे, दुरित तिमिर फाटे दुखकार। पुत्र मित्र धनधान्य कमल यह विकसे सुखद जगत हित प्यार। कछुक कालमैं सो शिवपावैं, पढैं सुनैं जिन जजैं निहार ॥ १८॥ इत्याशीर्वादः ॥इति०

दीप–रतन जडित-अथवा घृत पूरित, वा-कपूरमय जोत जगाय। दीप धरूं तुम चरनन आगे, जाते केवलज्ञान लहाय। हरिहर वंदित पाप निकंदित सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय। तुम पद पद्म सद्म- शिवदायक जजत मुदित मन उदित सुभाय। ऊँ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपंनिर्वपामीतिस्वाहा।

धूप–अगर तगर कृष्णागर चदन, चूर अगनि में देत जराय। अष्ट करम यह दुष्ट जरत हैं धूम धूम यह तास उडाय। हरि हर वंदित पाप निकंदित सुमतिनाथ त्रिभुवन, के राय। तुम पद पद्म सद्म शिवदायक जजत मुदित मन उदित सुभाय। ऊँ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–श्रीफल पूगी कदली दाडिम, आंब निंबु फल प्रासुक लाय। मोक्षमहा फल-चाखन कारण पूजतहूं तुमरे युग पाय। हरि हर वंदित पाप निकंदित सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय। तुम पद पद्म-सद्मशिवदायक-जजत मुदित मन उदित सुभाय। ऊँ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल चंदन तंडुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय। नाच राच सिरनाय समर्चूं, जैजै जै जै जै जिनराय। हरिहर वंदित पाप निकंदित सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय। तुम पद पद्म सद्म शिवदायक जजत मुदित मन उदित सुभाय। ऊँ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म

तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक चौपई।

गर्भ-संजयंत तज गरभ पधारे। श्रावण शुदि दुतिया सुखकारे। रह अलिप्त मुकर जिमछाया। जजूं चरन जैजै जिनराया ॥ १ ॥ ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल द्वितीया गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-चैत्र शुक्ल ग्यारस कहजानो। जन्मे सुमति सहित त्रयज्ञानो। मानो धरो धरम अवतारा। जजूं चरण युग अष्ट प्रकारा ॥ २ ॥ ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल एकादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप-नवमी सित वैशाख ही भाखा। तादिन तपधर निजरस चाखा। पारण पद्म सद्म पय कीनो। जजत चरन हम समता भीनो ॥ ३ ॥ ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल नवमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-शुकल चैत्र एकादशि हानें। घातिसकल जे जगपति जानें। समवसरण में कहे वृषसारं। जजूं अनंत चतुष्टय धारं ॥ ४ ॥ ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल एकादशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–चैत्र शुकल ग्यारस निरवाणा। गिर समेदतें त्रिभुवन माना। गण अनंत निज निर्मलधारी। जजूं देव सुधलेऊ हमारी ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल एकादशी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–सुमति तीनसौ छत्तिसौ, सुमति भेद दरसाय। सुमतिदेऊ विनतीकरूं, सुमति विलंब कराय १
दयावेलतरु सुगुण निधि, भवि कुमोद गणचंद। सुमति सतीपति सुमतिको, ध्यावो धरआनंद ॥२॥
पंच परावरतन हरण, पंच सुमति सित दैन। पंच लब्धि तादारके, गुण गाऊ दिन रैन ॥ ३ ॥

छंद भुजंग प्रियात। पिता मेरुराजा सबैसिद्ध काजा। जपै नामजाका सबै दुःख भाजा। महा सूर इक्ष्वाक वंशी विराजै। गुणग्राम जाके सबैठोर छाजै ॥ ४ ॥ तिन्हीं के महापुन्य सों आप जाए। तिहूलोक में जीव आनंदपाए। सुनीसीर ताहीघरी मेरु धायो। क्रियाजन्मकी सर्वकीनी जथायो ॥ ५॥ बहुर तातको सौंप संगीत कीनो। नमें हाथ जोरे भली भक्ति भीनो। बिताई दसे लाखही पूर्व बाले। प्रजा लाख उंतीसही पूर्वपाले ॥ ६ ॥ कछू हेत ते भावना वार भाए। तहां ब्रह्मलोकांतके देव आए। गए बोध ताहीसमै इन्द्र आयो। धरे पालकीमें सुउद्यान लायो ॥७॥ नमें सिद्धको केस लौंचे सबे ही। धरे ध्यानशुद्धं जु घाती हनेही। लह्योकेवलं औ समोसर्न साजं। गणाधीशजू एकसौ सोल राजं॥ ८॥ खिरैं शब्दतामें छहों द्रव्य धारे। गुण पर्ज उत्पाद व्यै ध्रौव्य सारे। तथा कर्म आठों तनी तीथि साजं।

मिलेजासके नाशतें मोक्षराजं ॥ ९ ॥ धरैं मोहनी सत्तरं कोड कोडी। सरित्यप्रमाणं थिति दीर्घ जोडी। अरू ज्ञान दृग वेदनी अतरायं। धरै तीस कोडा कुडी सिंधुकायं ॥१०॥ तथा नाम गोत कुडाकोडि बीसं। समुद्र प्रमाणं धरैं सत्तईस। सु तेतीस अब्धि धरैं आयु,अब्धि। कहे सर्वकर्मों तनी वृद्धि लब्धि ॥११॥ जघन्य प्रकारे धरै भेद येही। मुहूर्तं वसु नाम गोत्रं गणेही। तथा ज्ञान दृग्मोह प्रत्यूहआयं। सुअंतर्मुहूर्तं धरैं थित्तगायं ॥ १२ ॥ तथा वेदनी बारहै ही महूर्तं। धरै थित्त ऐसे भनो न्यायजूत। इन्हें आदितत्त्वार्थं भाखो असेशा। लहो फेर निर्वाणमाही प्रवेशा ॥१३॥ अनतं महंतं सुसन्तं सुततं। अमंद अफंदं अनदं अभंतं। अलक्षं विलक्षं सुलक्षं सुदक्षं। अनक्षं अवक्षं अभक्षं अतक्ष ॥१४॥ अवर्णं अघर्णं अमण अकर्णं। अभर्णं अतर्णं असर्णं सुसर्णं। अनेकं सदेकं चिदेकं विवेकं। अखंड सुमंडं प्रचंडं तदेकं ॥ १५ ॥ सुपर्मं सुधर्मं सुसर्मं अकर्मं। अनंतं गुणाराम जैवंत वर्मं। नमैं दासवृंदावनंसर्नआई। सबै दुःखतेमोहिलीजेछुडाई।

घत्ता छन्द—तुम सुगुण अनंता ध्यावत संता, भ्रमतम भंजन मार्तंडा। सतमत करचंडा भविक जमंडा, कुमत कुचल इन गनहंडा ॥ १७॥ ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वाद—छंद रोडक—सुमति चरण जो जजैं भविकजन,मन वच काई। तास सकल दुःख दंद फंद,तन छिनक्षैजाई। पुत्रमित्र धन धान्य शर्मं,अनुपम सो पावैं। वृंदावन निरवाण लहैं,जो निहचैं ध्यावैं॥१८

इत्याशीर्वादः ॥ इति श्रीसुमतिनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥५॥

६ अथ श्रीपद्मप्रभ जिन पूजा लिख्यते ।

(वृन्दावनकृत) छंद मदावलिप्तकपोल वा रोडक ।

स्थापना–पदमरागमणि वरन धरन तनतुंग अढाई । शतक दंड अघ खंड सकल सुर सेवत आई ॥
धरणि तात विख्यात सुसीमाजूके नंदन । पद्म चरन धर राग सुथापूं इतकर वंदन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक । चाल होलीकी तालयुत ॥

जल–गंगाजल अति प्रासुक लीनो सौरभ सकल मिलाय । मनवच तन त्रयधार देतही जन्म जरा मृतजाय ।
पूजं भावसो श्रीपद्मनाथ, पदसार पूजूं भावसो ॥ ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जर रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन–मलयागिर कपूर चंदन घस, केसर रंग मिलाय । भवतप हरन चरन पर वारो, मिथ्याताप मिटाय ॥
पूजूं भाव सो श्रीपद्मनाथ पदसार, पूजूं भाव सो ॥ ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीतिस्वाहा ।

अक्षत–तंदुल उज्ज्वल गंध अणीयुत, कनकथार भरलाय। पुज भरूं तुम चरनन आगे, मोही अखैपदवाय॥
पूजूं भाव सो श्रीपद्मनाथ पदसार, पूजूं भाव सो॥ ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–पारिजात मंदार कल्पतरु, जनित सुमन शुचिलाय। समरशूल निरमूल करनको, तुमपद पद्मचढाय॥
पूजूं भाव सो श्रीपद्मनाथ पदसार, पूजूं भाव सों॥ ऊँ ह्रीं श्रीपद्मनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–घेवर बावर आदि मनोहर, सद्य सजे शुचिभाय। क्षुधारोग निरनाशन कारण, जजूं हर्ष उरलाय॥
पूजूं भाव सो श्रीपद्मनाथ पदसार, पूजूं भाव सों॥ ऊँ ह्रीं श्रीपद्मनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–दीपकजोत जगाय ललितवर, धूमरहित अभिराम। तिमर मोह नाशन के कारण, जजूं चरण गुणधाम॥
पूजूंभावसो श्रीपद्मनाथ पदसार, पूजूंभावसो॥ ॐ ह्रीं श्री पद्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा।

धूप–कृष्णागर मलयागिर चंदन, चूर सुगंध मिलाय। अगनिमांहि जारूं तुमआगे, अष्टकरम जरजांय
पूजूंभावसो श्रीपद्मनाथपदसार, पूजूंभावसों॥ ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनायधूपं निर्वपामीतिस्वाहा।

फल–सुरसवरन रसना मन भावन,पावन फल अधिकार। तासो पूजूंयुगमचरणयह,विघ्तकर्मनिरवार॥ पूजूं भावसो श्री पद्मनाथ पदसार, पूजूं भावसो॥ ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल फलआदि मिलायगाय गुण,भगतिभाव उमगाय। जजूं तुमैं शिवतियवर,जिनवर आवागमन मिटाय। पूजूं भावसो श्री पद्मनाथ पदसार, पूजूं भाव सो॥ ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निर्वपामीतिस्वाहा।

अथपंचकल्याणक। छंद द्रुतविलंबित वा सुन्दरी।

गर्भ–असित माघ सुछट्ठ वखानिये। गर्भ मंगल को दिन मानिये। उरधग्रीवक सों चय राजजी। जजैंइंद्र जजें हम आजजी। ॐह्रींश्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्रायमाघ कृष्ण षष्ठीगर्भकल्याणकायअर्घनिर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–कृष्ण कार्तिक तेरस को जए, त्रिजग जीव सुआनन्द को लए। नगर स्वर्गसमान कुसंबिका। जजतहैं हरिसंयुतअंबिका॥ २॥ ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेंद्राय कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी जन्म कल्याण काय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

–कृष्णतेरस कार्तिक भावनी। तप धरो वन षष्टम पावनी। करत आतमध्यानधुरंधरो। जजत हैं हम पाप सबै हरो॥३॥ॐह्रींश्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्राय कार्तिककृष्णत्रयोदशीतपकल्याणकाय अर्घ निवपामीति स्वाहा

ज्ञान–शुक्ल पूनम चैत सुहावनी। परम केवल सो दिन पावनी। सुर सुरेश नरेश जजैं तहां। हम जजैं पद

पंकजकोयहां॥४॥ ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रायचैत्र शक्लपूर्णिमा ज्ञानकल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा

निर्वाण–असित फागुण चौथ सुजानिये। सकल कर्म महारिपु हानिये। गिर समेद थको शिवको गए। हम जजें पदध्यानविषै लए॥५॥ ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्थी मोक्ष कल्याण काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ जयमाला। घत्ता छन्द।

जैभवतमभंजनमुनिमनरंजन,कंजनकोदिवसाधेशा महाअर्घं जैपद्मजिनेशाशिवसद्मेशा,पादपद्मजजिपद्मेशा।

चौपाई–जैजै जिन भवि जन हितकारी। जै जै जै भवसागर तारी॥ जै जै समवशरणधनधारी। जैजै वीत राग हितकारी।।२॥ जै तुम सात तत्वविधि भाख्यो। जै जै नव पदार्थ लख आख्यो॥ जैषट द्रव्य पंचयुत काया। जै सब भेद सहित दरसाया॥३॥ जै गुणथान जीव परमानो। जै पहिले अनंत जिय जानों। जै दूजे सासादन माही। तेरह कोटि जीव थित आही॥४॥ जै जै तीजे मिश्र गुणथानो। जीवसु बावन कोटि प्रमानो॥ जै चौथे अव्रत गुण जीवा॥ चार अधिक शत कोटि सदीवा॥५॥ जय जिय देश वरत में शेषा। कोटि सात सौ है थित वेशा॥ जै प्रमत्त षट शून्य दोय वसु। पांच तीन नवपंच जीव लसु।६। जै जै अपरमत्तगुण कोरं॥ लक्ष छानवै सहस बहोरं॥ निन्यानवें एक शत तीना येते मुनिनितरहतप्रवीना॥७॥ जै जै अष्टम में दुइधारा। आठ शतक सत्तानो सारा॥ उपसममेंदुइसौ निन्यानों। क्षपकमांहितसुदूने जानो॥८॥ जै इतने इतने हितकारी। नवै दसैयुग श्रेणी धारी॥जैं ग्यार

उपसम मगगामी। दोसै निन्यानों अघभामी ॥ ९ ॥ जै जै क्षीणमोहगुण थानो। मुनि शत पांचअधिक अट्ठानो ॥ जजै तेरहमे अरहंता। युग नभ पनवसु नव वसुसंता ॥१०॥ येते राजत हैं चतुरानन। हम वंदें पदथुति कर आनन ॥ जै अजोग गुणमे जै देवा। पनसौठानौ करौसुसेवा॥११॥ तित अइउऋलृलघु भाखत कर थित फिर शिव आनंद चाखत ॥ ये उत्कृष्ट सकल गुण थानी। तथा जघन्य मध्य जेप्रानी॥१२॥ तीनो लोक सदनके वासी। निजगुण परज भेदमय रासी। तथा औरद्रव्यनके जेते। गुण परयाय भेद हैं तेते१३ तीनों कालतनेजु अनंता। सो तुमजानत युगपत संता ॥ सोई दिव्य वचन के द्वारे। दे उपदेश भविक उद्धारे॥ १४ ॥ फेर अचल थल वासा कीनो। गुण अनंत निज आतम भीनो। चरम देहतै किंचित ऊनो नर आकृतितित है नित गूनो ॥१५॥ जैजै सिद्ध देव हितकारी। बार बार यह अरज हमारी। मोको दुख सागर तैं काढो। वृन्दाबन याचत है ठाढो ॥ १६ ॥

घत्ताछन्द–जैजै जिनचंदा पद्मा नन्दा, परम सुमति पद्माधारी ॥ जै जन हितकारी दया विचारी जै जै जिनवर अविकारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छन्द रोडक–अथआशीर्वाद–जजत पद्म पदपद्मसद्मताके सुपद्मअत ॥ होतवृद्धिसुतमित्रसकल आनंदवृन्द शत। लहत स्वर्गपद राज तहांतैं चय इत आई॥ चक्रीको सुख भोग अंत शिव राजकराई॥१८॥

इत्याशीर्वादः॥ इति श्री पद्मप्रभजिन पूजा संपूर्णा ॥६॥

७ अथ श्रीसुपार्श्वनाथ जिन पूजा प्रारम्यते।

वृन्दावन कृत (छंद गीता)

स्थापना—जैजैजिनंद गनिंद इंद नरिंद गुण चिंतन करै। तन हरितमणिसम हरत मनतमलखतउरआनदभरै

नृप सुपरतिष्ट वरिष्ट इष्ट महिष्ट सिष्ट प्रथिप्रिया। तिन नंदके पदवंद वृंद अमंदथापत युतक्रिया॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्।

अथ अष्टक (चाल द्यानतरायकृत सोलह कारण अष्टककी)

जल—उज्वल जल शुचि गंध मिलाय। कचनझारी भर करलाय। दयानिधि हो कृपानिधि हो। जै जग

बंधु दयानिधिहो। तुम पदपूजुं मनवचकाय। देव सुपारस शिवपुर जाय दयानिधि हो०॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म

मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन—मलयागिर चंदनघस सार। लीनों भवतप भंजन हार। दयानिधि हो दयानिधि हो। जय

जग बन्धु दया निधिहो। तुम पद पूजूं मन बच काय,देव सुपारस शिवपुर जाय। दयानिधिहो०।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–देवजीर सुखदास अखंड। उज्वल जल छालित सितमंड। दयानिधि हो दयानिधि हो। जय जगबन्धु दयानिधि हो। तुम पद पूजूं मन वच काय। देव सुपारस शिवपुर जाय दयानिधि हो०।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–प्रासुक सुमन सुगंधितसार। गुंजत अलि मकरध्वजहार। दयानिधि हो दयानिधि हो। जय जग बन्धु दयानिधि हो। तुम पद पूजूं मन वच काय, देव सुपारस शिवपुर जाय। दयानिधि हो०

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–क्षुधा हरन नेवज वर लाय। हरूं वेदनी तुमैं चढाय। दयानिधि हो दयानिधि हो। जय जग बन्धु दयानिधि हो। तुमपदपूजूं मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुर जाय दयानिधि होय०॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दीप–ज्वलित दीप भरकर नवनीत। तुम ढिग धारत हूं जगमीत॥ दयानिधि हो दयानिधि हो। जय जग

बन्धु दया निधि हो। तुम पद पूजूं मनवच काय, देव सुपारश शिवपुर जाय दया निधि हो० ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

धूप–दशविध गंध हुताशन मांहि। खेवत अष्टकर्म जर जांहि। दयानिधि हो। दयानिधिहो जय जगबन्धुदया निधि हो। तुम पद पूजूं मन वच काय, देव सुपारस शिवपुर जाय दयानिधिहो०॥ॐह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तायअष्टकर्म दहनायधूपंनिर्वपामीतिस्वाहा।

फल–श्रीफल पिस्ता आदि अनूप। ले तुम अग्रधरूं शिव भूप॥ दया निधिहो। दयानिधि हो जय जगबन्धु दया निधिहो। तुम पदपूजूंमनवचकाय देवसुपारस शिवपुर जाय। दयानिधिहो०।ॐह्रींश्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रायगर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्तायमोक्षफल प्राप्तयेफलं निर्वपामीतिस्वाहा।

अर्घ–आठों दरबसाज गुणगाय। नाचतराचत भगति बढ़ाय। दयानिधिहो दयानिधि हो। जयजगबन्धु दयानिधि हो॥तुम पदपूजूमनवचकाय, देवसुपारसशिवपुरजाय दयानिधि हो॥ॐह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्तायअनर्घपद प्राप्तये अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा

अथ पंचकल्याणक। छंद द्रुतविलंबित वा सुन्दरी।

गर्भ–शुक्लभादव षष्ठी जानिये। गर्भमंगल ता दिन मानिये॥ करत सेव शचि रच मातकी। अर्घलेय जजूं वसुभांत की॥ १ ॥ॐह्रींश्रीसुपार्श्व नाथ जिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ल षष्ठी गर्भ कल्याण काय

अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म-शुकलज्येष्ठ दुवादशि जन्मये । सकलजीव सुआनन्द तन्मये ॥ त्रिदशराज जजैं गिरिराजजी । हम जजैं पद मंगल साजजी ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठशुक्लद्वादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

तप-जनम के तिथ श्रीधरनेधरी । तप समस्तप्रमादनको हरी॥ नृपमहेन्द्र दियोपय भावसों । हमजजैंइत श्रीपद चावसों ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान-भ्रमर फागुण छट्ठ सुहावनो । परम केवल ज्ञान लहावनो ॥ समवसर्न विषै वृषभाषियो । हम जजैं पद आनंद चाखियो ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेंद्राय फाल्गुणकृष्णषष्ठी ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

निर्वाण-असित फागुन सातय पावनो । सकल कर्म कियो छयभावनो ॥ गिर समेद थकी शिवजात है । जजतहीं सब विघन विलातहै ॥ ५॥ ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेंद्राय फाल्गुण कृष्णसप्तमी मोक्ष कल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथजयमाला दोहा।

महाअर्घ-तुंगअंग धनुदोयसौ,शोभा सागरचन्द ॥ मिथ्यातपहर सुगुन कर, जयसुपार्श्वसुखकन्द ॥१॥

छन्दकामनी मन मोहन।

धनदेवने। नगर जति जिनराज शिवराजहेत हो। परम वैराग्यआनंदभरहेत हो॥ गर्भ के पूर्वषट् मास धनदेवने। नगर निरमापियाबानारसीसेवने॥२॥ गगन से रत्नकी धार बहुवर्षही। कोडत्रेअर्धत्रेबारसबहर्ष ही॥ तातके सदन गुणवदनरचनारची। मात कीसर्वविधकरतसेवाशची॥३॥ भयो जब जन्म तब इंद्रआसनचलो। होय चक्रित तुरतअवधितैलखभलो॥सप्तपगजायसिरनायवंदनकरी॥चलतउमगोतवैमानधनधनघरी॥४॥ गलितमदगंडऐरावती साजियो। लक्ष सातविध सैनगजवृषभरथवाजिले। गंधर्वनृत्यकारीसबैसाजिले॥ गलितमदगंडऐरावती साजियो। लक्ष योजन सुतन वदन सतराजियो॥५॥ वदनवसुदन्त प्रतिदन्तसरवर भरे। तासुमध्यशतक पन वीस कमलन खरे॥ कमलनीमध्य पनवीसफूले कमल। कमल प्रतिकमलमह एकसौआठदल।६। सबदलकोटि सतवीस परमान जू। तासपर अपछरा नचहिं युत मानजू॥ तततता तततता विततता ताथई। धृगमता धृगमता धृगमता मैलई॥७॥ धरत पग सननन सननन गगनमें। नूपूरेंझननन झननननपगन में। नचत इत्यादि केइभांति सो मगन में। केई तित बजत बाजे मधुरगगन में॥८॥ केई दृम दृम सुदृम मृदंगधुधुनै। केईझल्लर झनन झननन झंझुनै॥ केई संसाग्रदि संसाग्रदि सारंगसुर। केईवीनापटहवंसिबा जै मधुर॥९॥ केई तन तननन तननन तानें पूरैं। शुद्ध उच्चार सुर केई पाठें पूरैं॥ केई झुक झुकफिरैं चक्रसी भामिनी। धृगतां धृगतां परम शोभावनी॥१०॥ केई छिननिकट छिन दूर छिन थूल लघु।

धरत वैक्रिय परभावसो तनसूभषु॥केई करतालकर ताल तलमें धूनैं। तत वितत घन सुखराजतबाजे मूनें ॥ ११ ॥ इंद्रआदिक सकलसाज सग धारकै। आयपुर तीनफेरी करी प्यारकै॥ शचीतवजायपरसूत थलमोद में। मात करनींद लीनो तुमैं गोद में ॥१२॥ आन गिरबाननाथ ही दियोहाथमें। छत्रअरचमरवर हरि करतमाथमें ॥ चढेगजराजजिनराजगुणजापियो। जायगिरराजपांडुकशिलाथापियो ॥ १३ ॥लेय पंचमउदधिउदक करसुरन। सुरनकलसन भरेसहितचर्चितपुरन॥ सहस अर आठ सिरकलस ढारोजबै। अघघघ घघघघ भभभभभौतबै ॥ १४ ॥ धधधध धधधध धुनिमधुरहोतहै। भव्य जनहसके हर्षउद्योत है ॥ भयोइमन्हौन तब सकल गुण रंग में। पौंछिश्रृंगारकीनो शचीअंगमें ॥ १५ ॥ आनपितुसदन शिशु सोंप हरिथलगया। बालवयतरुण लहिराजसुखभोगियो ॥ भोगतज योग गह चार अरीको हने। धार केवल परमधर्म द्वैविधभने ॥१६॥ नाश अरिशेष शिवथानवासी भये। ज्ञानदृग शर्म वीरजअनंते लये॥ सोजगतराज यह अरज उरधारियो। धर्म के नन्दको भव उदधितारियो ॥ १७ ॥ ॥ घत्ताछन्द ॥ जैकरुणाधारीशिवहितकारी,तारन तरन जिहाजा हो। सेवक नितवन्दै मनआनन्दै, भवभयमेटन काजाहो

ॐह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तयेमहाअर्घ निर्वपामीतिस्वाहा ॥

॥ अथआशीर्वाद। दोहा ॥

श्रीसुपार्श्वपद युगलजो, जजै पढै यह पाठ। अनुमोदै सो चतुरनर, पावै आनंद ठाठ॥१९॥

इत्याशीर्वाद ॥ इतिश्री सुपार्श्वनाथ जिनपूजा संपूर्णा ॥ ७ ॥

८ अथ श्रीचन्द्रप्रभजिन पूजा लिख्यते।

बृन्दाबन कृत। छंद छप्पै(यमकालंकार)

स्थापना–चारुचरन आचरन चरन,चित हरनचिहन चर। चंद चंदतन चरन चंदथल,चहत चतुर नर॥
चतुक चंड चकचूर चार चिद, चक्रगुणाकर॥ चंचल चलित सुरेश चूलनुत, चक्र धनुर हर॥
चरअचरहितुतारनतरन,सुनतचहकचिरनंदशुची॥जिनचंद चरनचरचूचहत,चितचकोर नच रच रुची।
दोहा–धनुषडेढ़सो तुंगतन,महासेननृपनंद॥ मात लक्ष्मणा उर जये। थापूं चंद जिनन्द॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्रअत्रावतरावतर संवौषट् आव्हाननम्॥

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभ जिनेन्द्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री चंद्र प्रभ जिनेंद्र अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्॥

अथ अष्टक (चाल द्यानतरायजी कृत भाषा नंदीश्वराष्टककी)

जल–गंगादिक निरमल नीर, हाटक भृंगभरा। तुम चरन जजूंवरवीर, मेटो जन्म जरा॥ श्रीचंद्रनाथ दुति चंद्र चरननचंद्र लगे। मन वच तन जजंत अमंद,आतम जोत जगे। ॐह्रींश्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय गर्भजन्मतप ज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणप्राप्ताय जन्ममृत्युजरारोगविनाशनायजलंनिर्वपामीतिस्वाहा॥

चन्दन–श्री खंड करपूर सुचग,केशर रंगभरी। घस प्रासुक जल के संग,भव आताप हरी। श्री चन्द्रनाथ

दुतिचन्द्रचरणन चन्द्रलगे। मनवच तन जजत अमन्द,आतम जोत जगे। ॐ ह्रींश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंच कल्याणप्राप्ताय संसाराताप रोग विनाशनायचंदनंनिर्वपामीतिस्वाहा

अक्षत–तंडुलसित सोम समान, समलय अनियारे ॥ दियपुंजमनोहर आन,तुमपदतर प्यारे ॥ श्रीचन्द्र नाथ दुतिचन्द्र, चरणन चन्द्र लगे। मन वच तन जजत अमन्द, आतम जोत जगे॥ ॐह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–सुरद्रुमके सुमन सुरंग,गंधित अलि आवै। तासो पद पूजत चंग कामविथाजावै॥श्रीचन्द्रनाथदुति चन्द्र,चरणन चन्द्रलगे। मन वच तन जजत अमन्द,आतम जोतजगे॥ॐह्रीं श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप,ज्ञान,निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनायपुष्पंनिर्वपा मीति स्वाहा॥

नैवेद्य–नेवज नानाप्रकार, इंद्री वलकारी। सोले पूजूंपदसार,आकुलता हारी॥ श्रीचंद्र नाथ दुतिचंद्र चरणन चन्द्र लगे॥ मन वच तन जजत अमंद,आतम जोत जगे॥ ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेंद्राय गर्भ जन्म तप ज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणप्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा॥

दीप–तम भंजन दीप सवार,तुमढिग धारत हूं।मम तिमिर मोह निवार,यह गुण धारतहूं॥श्रीचंद्रनाथदुति चंद्र चरणन चंद्र, लगे। मन वच तन जजत अमन्द,आतम जोत जगे॥ॐह्रींश्रीचंद्रप्रभ जिनेंद्राय गर्भ जन्मतपज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनायदीपनिर्वपामीति स्वाहा॥

धूप—दश गन्ध हुताशन मांहि,हेप्रभुखेवत हू। ममकर्म दुष्ट जर जाहिं, यातैं सेवत हू। श्री चंद्रनाथ दुति चंद्र, चरणन चंद्र लगे मन वच तन जजत अमन्द, आतम जोत जगे॥ ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाणपचकल्याणप्राप्ताय अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीतिस्वाहा।

फल—अति उत्तम फलसुमंगाय, तुम गुण गावत हू। पूजूं तन मन हरषाय, विघन नसावत हू॥ श्रीचंद्र नाथ दुतिचंद्र, चरणन चंद्र लगे। मन वच तन जजत अमन्द, आतम जोत जगे॥ ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्पपामीति स्वाहा॥

अर्घ—सज आठों दर्व पुनीत,आठोअंग नमू। पूजू अष्टम जिनमीत, अष्टम अवनि गमूं॥ श्रीचन्द्रनाथ दुति चन्द्र चरणन चन्द्र लगे। मनवच तन जजत अमन्द, आतम जोत जगे॥ ॐ ह्रीं श्रीचन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ पंच कल्याणक। छंद तोटक।

गर्भ—कलि पंचम चैत सुहातअली। गरभागम मगल मोदरली॥ हरि हर्षित पूजत मातपिता। हम ध्यावत पावत शर्म सिता॥ १॥ ॐ ह्रीं श्री चद्रप्रभ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण पंचमी गर्भ कल्याण काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

जन्म–कलिपोष इकादशि जन्म लियो। तिहूंलोक विषै सुख थोक भयो ॥ सुरईश जजैं गिरिशीश तबै हम पूजत हैं नुत शीश अबै। ॐ ह्रीं श्रीचंन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पौषकृष्ण एकादशी जन्म कल्याण। काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तप–तपदुर्द्धर श्रीधर आपधरा। कलपौष इकादशि पर्व वरा ॥ निज ध्यान विषै लवलीनभए। धनसो दिन पूजत विघ्न गए ॥ ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण एकादशी तप कल्याणकायअर्घं निर्वंपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान–वर केवल भानुउदोत कियो। तिहूलोकतनो भ्रम मेट दियो॥ कलि फागुणसप्तमि इंद्र जजैं। हमं पूजहि सर्व कलंक भजैं ॥४॥ ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णसप्तमी ज्ञानकल्याण काय अर्घनिर्वपामीति स्वाहा ॥

निर्वाण–कलि फागुण सप्तमि मुक्त गए। गुणवंत अनन्त अवाध भये॥ हरिआयजजै तित मोद धरे। हम पूजत ही सब पाप हरे ॥ ॐ ह्रीं श्रीचंद्र प्रभ जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्णसप्नमी मोक्षकल्याण काय अर्घं निर्वपा मीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–हे मृगंकअंकित चरन, तुम गुण अगम अपार॥ गणधरसे नहि पारलही,तो को समरथसार।१

पै तुम भगति सुहियेमम,परै अति उमगाय। तातैं गावूंगुणसुगुण, तुम ही होऊ सहाय ॥२॥

छंद युग्म पद्धड़ी ॥ जै चंदजिनंद दयानिधान। भव कानन हानन दवप्रमान ॥ जै गर्भ जनम मंगल दिनंद। भविजीव विकाशन शर्म कंद॥ २ ॥ दश लक्ष पूर्व की आयु पाय। मनवंछित सुखभोगे जिनाय। लख कारण व्है जगते उदास। चिंते अनुप्रेक्षा सुख निवास ॥४॥ तितलौकांतिक बोध्योनियोग। हरि शिविका सज धरियो अभोग। तापे तुम चढ जिनन्दराय। ताछिन कीशोभा को कहाय॥ ५ ॥ जिन अंगसेत सित चमर ढार। सित छत्र सीस गल गुलक हार॥ सित रतनजडित भूषणविचित्र। सितचंद्र चरण चरचे पवित्र॥ ६ ॥ सित तन दुति नाकाधीशआय। सित शिविका कांधेधर सुचाय॥ सित सुजस सुरेश नरेश सर्व। सित चितमें चिंतत जात पर्व॥ ७ ॥ सित चन्दनगरतै निकसि नाथ। सित वन में पहुंचे सकल साथ॥ सित शिला शिरोमणि स्वच्छछाह। सिततप तित धारो तुम जिनाह ।८। सितपयको पारन परमसार। सित चंद्रदत्त दीनो उदार॥ सित करमें सो पय धार देत। मानो बांधत भव सिंधु सेत।९। मानो सुपुण्य धारा प्रतच्छ। तित अचरज पनसुरकिय ततच्छ ॥फिर जाय गहन सित तप करंत। सित केवलजोतिजग्योअनंत॥१०॥लहि समवसरन रचनामहान। जाके देखत सबपापहान॥ जह तरुअशोक शोभे उत्तंग। सब शोकतनो चूरे प्रसंग॥ ११ ॥ सुर सुमन वृष्टिनभते सुहात। मनु मनमथ तज हदि पारजात॥ वाणी मुखसो जिम खिरतसार। मनु तत्वप्रकाशन मुकरधार॥ १२ ॥जहां चौसठ चमर अमर ढुरंत। मनुसुजस मेघझर लगि पतंत॥ सिंहासन है जहां कमलयुक्त। मनुशिव सरवरको कमल युक्त॥ १३ ॥ दुंदुभि जित बाजत मधुर सार। मनु कर्म जीत को है नगार॥ सिर छत्र

फिरेत्रयसेतवर्ण। मनुरतन तीन यह पाप हर्ण॥ १४॥ तन प्रभा तनो मंडल सुहात। भविदेखतनिजभव सात सात॥ मनुदर्पन दुति यहजगमगाय। भविजन भव मुख देखत सुआय ॥ १५ ॥ इत्यादि विभूति अनेक जान। बाहिज दीखत महिमा महान। ताको वरनत नहि लहत पार। तो अंतरंग को कहै सार ॥ १६॥ अन अनन्त गुणन युत कर विहार। धर्मोपदेश दे भव्यतार। फिर योग निरोध अघाति हान। सम्मेद की लिय मुकति थान ॥ १८॥ वृन्दवन वदत सीस नाय। तुम जानत हो मम उरज भाय॥ तातें क्या कहूं सुवार वार। मम वंछित कारज सार सार॥ १८॥

घत्ता छन्द–जय चन्दजिनन्दा आनन्द कन्दा, भव भय भजन राजे हो ॥ रागादिक द्वन्दा हरि सब फन्दा, मुकति मांहि थिन साजे हो ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पञ्च कल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ आशीर्वाद–चौबोल–आठो दर्व मिलाय गाय गुण,जो भविजन जिनचंद जजैं। ताके भव भव के अघ भाजैं, मुक्ति सार सुख ताहि सजै। यमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं वृंदावन ऐसोलख पूजत, जातैं शिवपुर राज रजैं॥ इत्याशीर्वादः॥

इति श्रीचद्रप्रभजिनपूजा संपूर्णा॥

९ अथ श्रीपुष्पदन्तजिन पूजा प्रारभ्यते।

(बृन्दावन कृत)छंद मदावलिप्त कपोल वा रोडक।

स्थापना-पुष्पदंत भगवंत संत, सु जपत अनंत गुण। महिमावंत महंत कंत, शिवतिय रमंत मुन।
काकंदी पुर जनम, पिता सुग्रीव रमा सुत। श्वेत वरन मनहरन,तुम्हैं थापू त्रिवार नुत॥ १॥
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ओं ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ· ठः स्थापनम्।
ओं ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भववषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक (चाल होरी ताल युत)

जल-हिमवन गिरिगत गंगा जलवर,कंचन भृंग भराय। करम कलंक निवारन कारनजजूं तुम्हारे पाय।
मेरी अरज सुनीजे पुष्पदन्त जिनराय,मेरी०। ओं ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप
ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा।
चन्दन-बावन चंदन कदली नंदन,कुंकुम संग घसाय। चरचूं चरन हरन मिथ्यातप, वीतराग गुणगाय।
मेरी अरज सुनीजे पुष्पदन्त जिनराय,मेरी०। ओं ह्रीं श्री श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप,
ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–शालि अखंडित सौरभ मंडित, शशिसम दुति दमकाय। ताको पुंजधरूं चरनन ढिग, देऊ अखय पद राय। मेरी अरज सुनीजे पुष्पदन्त जिनराय,मेरी०। उों ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेद्राय गर्भ,जन्म, तप, ज्ञान निर्वाणपंचल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–सुमन सुमनसम परिमल मण्डित गुंजत अलिगण आय। ब्रह्मपुत्र मद भंजन कारण, जजूं तुम्हारे पाय। मेरी अरज सुनीजे पुष्पदंत जिनराय,मेरी०। उों ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नवेद्य–घेवर बाबर फेणी गोझा, मोदन मोदन लाय। क्षुधा वेदनी रोग हरनको,भेंट धरूं गुणगाय। मेरी अरज सुनीजे पुष्पदन्त जिनराय, मेरी०। उों ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–वाति कपूर दीप कंचनमे, उज्वल जोति जगाय। मोहनाशक तुमको लख, धरूं निकट उमगाय। मेरी अरज सुनीजे पुष्पदन्त जिनराय,मेरी०। उोंह्रींश्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप– दसवर गंध धनंजयके संग,खेवत हूं गुण गाय। अष्ट करम यह दुष्ट जरें सो,धूमधूम सु उडाय। मेरी अरज सुनीजे पुष्पदन्त जिनराय। मेरी०। उों ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाणपचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-श्रीफल पूगी और सुचिरभट,दाडिम आंबमंगाय। तासो तुमपद पद्म जजूं विघन सघन मिटजाय।

मेरी अरज सुनीजे पुष्पदन्त जिनराय। मेरी०। ओंह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तपज्ञान

निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-जल फल सकल मिलाय मनोहर,मन बच तन हुलसाय। तुम पद पूजूं प्रीतिलगाके जैजैजै त्रिभु-

वनके राय।मेरी अरज सुनीजे पुष्प दन्त जिनराय। मेरी०। ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ

जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ पंचकल्याणक। (छंद स्वयंभू)

गर्भ-नौमी तिथकारी फागुणधारी, गर्भमाहि थित देवाजी। तज आरण थानं कृपा निधानं, करत शची

तित सेवाजी। रतनन की धारा परम उदारा, पडो व्योमते साराजी। मैं पूजूं ध्याऊं भक्ति बढाऊं,

करो मोहि भव पाराजी ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेद्राय फाल्गुण कृष्ण नवमी गर्भ कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-मगसिर सितपक्षं परिवा साक्षं,जनमे तीरथनाथाजी। तबही चवभेवा निरजरयेवा,आय नये निज

माथाजी। सुरगिर नहवाये मगल गाये,पूजे प्रीत लगायेजी। मैं पूजूं ध्याऊं,भक्ति बढाऊं निज

निधि हेतु सहाई जी ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्रायमार्गशिर शुक्ल प्रतिपदा जन्म कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

तप–सित मगसिर मासा थित सुखरासा एकमके दिन धाराजी। तप आतमज्ञानी आकुलहानी मौन सहित अविकारा जी। सुरमित्र सुदानीके घरआनी, गोपय पारन कीनोजी। तिनको मैं वंदूं पाप निकंदूं जो समतारस भीनोजी ॥ ३ ॥

ऊँ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल प्रतिपदा तप कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा

ज्ञान–सित कातिक गाये,दोयज धाये घातिकरम परचंडाजी। केवल परकाशे भ्रमतम नाशे सकल सार सुख मंडाजी। गणराजअठासाआनंदभासी,समवसरनव्रषदाताजी। हरि पूजन आयो सीस नवायो हम पूजैंजगताताजी ॥४॥

ऊँ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय कार्तिक शुक्ल द्वितीया ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

निर्वाण–भाद्रव सितसारा आठैंधारा गिरसमेद निरवानाजी। गुण अष्ट प्रकारा अनुपम धारा जैजै कृपा-निधानाजी। तित इंदसुआयो पूज रचायो चिन्ह तहां करदीनोंजी। मैं पूजतहूं गुण ध्याय महीसो तुमरे रसमें भीनोजी ॥ ५ ॥

ऊँ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्लाष्टमी मोक्ष कल्याणकायअर्घंनिर्वपामीति स्वाहा॥

अथ जयमाला॥ दोहा॥

महाअर्घं–लक्षण मकर सुश्वेततन तुंग धनुष शत एक। सुर नर वंदित मुक्ति पतिनमूं तुम्हें सिर टेक ॥१॥
पुहुप रदन गुण वदन जिम, सागर तोय समान। क्योंकर कर अंजुलिन कर, करिये तासु प्रमान।

॥ छंद तामरस ॥

पुष्पदंत जयवंत नमस्ते । पुण्यतीर्थंकर संत नमस्ते । ज्ञान ध्यान अमलान नमस्ते । चिद्विलास सुखखान नमस्ते ॥ ३ ॥ भव भय भंजन देव नमस्ते । मुनिगण कृत पदसेव नमस्ते । मिथ्या निशि दिन इंद्र नमस्ते । ज्ञानपयोदधि चंद्र नमस्ते॥४॥भव दुखतरु निष्कन्द नमस्ते । राग दोष मद दहन नमस्ते । विश्वेश्वर गुण भूर नमस्ते । धर्म सुधारस पूर नमस्ते ॥ ५ ॥ केवल ब्रह्म प्रकाश नमस्ते । सकल चराचर भास नमस्ते। विघ्नमहीधर विज्ज नमस्ते । जै ऊरधगति रिज्ज नमस्ते ॥ ६ ॥ जै मकराकृत पाद नमस्ते। मकरध्वज मदवाद नमस्ते। कर्म भर्म परिहार नमस्ते । जै जै अधम उधार नमस्ते॥७॥ दया धुरंधरधीर नमस्ते। जैजै गुणगंभीरनमस्ते । मुक्ति रमणिपतिवीर नमस्ते । हर्ताभव भयपीर नमस्ते॥८॥व्ययउत्पति थितधार नमस्ते। निजाधारअविकार नमस्ते । भव्य भवोदधि तारि नमस्ते । वृंदावननिस्तारनमस्ते॥९॥

घत्ताछन्द–जै जै जिनदेवं हरिकृत सेवं, परम धरमधन धारी जी। मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं, मेटो विथा हमारीजी ॥ १० ॥ ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप, ज्ञान निर्वाण पंच-कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।

अथ आशीर्वाद ॥ छद मदावलिप्त–पुहपदत पद संत जजें, जो मन वच कायी । नाचैं गावैं भगति करैं, शुभ परणति लायी । सो पावैं सुख सर्व, इंद अहमिंद तनोवर । अनुक्रमतैं निरवान लहै, निहचैं प्रमोद धर ॥ ११ ॥ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ इति श्रीपुष्पदंत जिन पूजा संपूर्णा ॥९॥

१० अथ श्रीशीतलनाथ जिन पूजा लिख्यते।

(वृन्दावन कृत) छंद मातग (मत्तगयद) (सवैया २३ वां)

स्थापना-शीतलनाथ नमूं धरहाथ सु, माथ जिन्हो भवगाथ मिटाये।
अच्युततैं च्युत मात सुनंदके, नंदभये पुर भद्दल आये॥
वंश इक्ष्वाक कियो जिन भूषित, भव्यनको भवपार लगाये।
ऐसे कृपा निधिके पद पंकज, थापत हूं हियहर्ष वढाये॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आव्हाननम्।
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक। छंद वसंत तिलका।

जल-देवापगासु वरवारि विशुद्ध लायो। भृंगारहेम भरभक्ति हिये वढायो। रागादिदोष मल मर्दन हेतुयेवा। चर्चूं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा॥ ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन-श्रीखंडसार वर कुंकुम गारलीनो। कंसंग स्वच्छघस भक्ति हिये धरीनो॥ रागादि दोषमद मर्दन

तु येवा। चर्चूं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा॥ ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय ससारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत—मुक्तासमान सित तंडुलसारराजे। धारंत पुंज कलकुंज समस्त भाजे। रागाऽदि दोष मद मर्दन हेतुयेवा। चर्चूं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा॥ ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याणप्राप्ताय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प—श्रीकेतुकी प्रमुखपुष्प अदोष लायो। नौरंग जंगकर भग सुरंग पायो। रागादि दोष मद मर्दन हेतु येवा। चर्चूं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा। ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य—नैवेद्यसार चरु चारु संवार लायो। जंबूनद प्रभृत भाजन सीसनायो। रागादि दोष मद मर्दन हेतु येवा। चर्चूं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा॥ ओ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यंनिर्वपामीति स्वाहा।

दीप—स्नेह प्रपूरित सुदीपक जोतिराजें। स्नेह प्रपूरित हिए जजतेऽघ भाजें। रोगादि दोष मद मर्दन हेतुयेवा। चर्चूं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा। ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप—कृष्णागरु प्रमुखगंध हुताश माही। खेवो तवाग्र वसुकर्म जरंत जाही। रागादि दोष मद मर्दन

हेतु येवा। चर्चूं पदाब्ज तव शीतल नाथ देवा। ॐ ह्रीं श्रीशीलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–निंबाम्र कर्कटि सुदाडिम आदिधारा। सौवर्णगंध फल सारसुपक्कपारा। रागादि दोष मद मर्दन हेतु येवा। चर्चूं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा। ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–कंश्रीफलादि वसु प्रासुक द्रव्यसाजे। नाचे रचे मचत बज्जत सज्जबाजे। रागादि दोष मद मर्दन हेतु येवा। चर्चूं पदाब्ज तव शीतलनाथ देव। ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याणक। छंद इंद्रवज्रा।

गर्भ–आठैं वदी चैतसु गर्भमाही। आये प्रभू मंगल रूप ताही। सेवैं शची मात अनेक भेवा। चर्चूं सदा शीतलनाथ देवा॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण अष्टमी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–श्रीमाघकी द्वादशि श्याम जायो। भूलोक में मंगलसार आयो। शैलेंद्र पै इंद्र फणींद्र जज्जे। मैं ध्यान धारो भवदुःख भज्जे॥ २॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय माघ कृष्ण द्वादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–श्रीमाघकी द्वादशी श्याम जानों। वैराग्यपायो भव ताप हानों। ध्यायो चिदानंद निवार मोहा। चर्चूं सदा चर्ण निवारी कोहा॥ ३॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय माघ कृष्ण द्वादशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–चतुर्दशी पौष वदी सुहायो। ताहीदिना केवल लब्धि पायो। शोभै समौसृत्य बखान धर्मं। चर्चूं सदा शीतल पर्म शर्मं॥ ४॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण चतुर्दशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–कुंवारकी आठय शुद्ध बुद्धा। भये महा मोक्ष सरूप शुद्धा। सम्मेद तैं शीतलनाथ स्वामी। गुणाकरंता सुपदं नमामी॥ ५॥ ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय आश्विन शुक्लाष्टमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। छंद चंचल तरंग।

आप अनंत गुणाकर राजे। वस्तु विकाशन भान समाजे। मैं यह जान गही सरना है। मोह महारिपुको हरना है।

दोह–हेम वरन तनतुंग धनु, नव्वै अति अभिराम। सुरतरु अंक निहार पद, पुनि पुनि करूं प्रणाम॥

छंद त्रोटक–जै शीतलनाथ जिनंद वरं। भवदाघ दवानल मेघझरं। दुख भूभृत भंजन वज्र

समं । भव सागर नागर पोत पमं ।३। कुह मान मया गद लोभ हरं । अरि विघ्नगयंद मृगेंद्र वरं । बृष वारिद बृष्टन सृष्टिहितू । परदृष्टी विनाशन सुष्ट पितू ॥ ४ ॥ समवश्रुत संयुत राजत हो । उपमा अभिराम विराजतहो । वरबारह भेद सभाथितको । तित धर्म बखान कियो हितको ॥ ५ ॥ पहिले मह श्रीगणराज रजैं । दुतियेमहकल्पसुरीजु सजैं । तृतिये गणणी गुण भूरि धरैं । चवथे तिय-जोतिष जोतिभरैं ॥ ६ ॥ तियव्यंतरनीपनमें गिनिये । छहमें भुवनेसुर तिय भनिये । भुवनेश दसौथित सप्तम है । वसुमें वसु व्यंतर उत्तम है ॥ ७ ॥ नवमें,नभ जोतिष पंचभरे । दसमें दिवदेव समस्त खरे । नर वृंद इकादशमें निवसैं । अरु बारहमे पशु सर्व लसैं ॥ ८ ॥ तज वैर प्रमोद धरे सबही । समता रस मग्न लसे तबही । धुनि दिव्यसुनैं तज मोहमलं । गणराज असीहैं ज्ञान बलं ॥ ९ ॥ सवके हित तत्व बखान करैं । करुणा मन रंजन शर्म भरैं । वरणै षट द्रव्यतने जितने । वर भेद विराजत हैं तितने ।१०। पुनिध्यानउभे शिवहेतु मुना । इक धर्म दुती सुकलं अधुना । तित धर्मसुध्यान तना गनिये । दशभेद लखै भ्रमको हनिये ॥ ११ ॥ पहिलो अरिनाश अपाय सही । दुतियो जिनवैन उपाय गही । त्रिति जीव विचै निज ध्यावत है । चवथो सु अजीव रमावत है ॥ १२ ॥ पनमो सु उदैबल टारन है । छहमों अरि राग निवारन है । भव त्यागन चिंतन सातमहै । वसुमो जित लोभन आतम है ॥ १३ ॥ नवमो जिनकी धुनि सीसधरें । दसमो जिन भाखित हेतकरैं । इम धर्मतनो दस भेद भनो । पुनि शुक्लतनो चहुं येम गनो ॥१४॥ सु पृथक्त वितर्क विचार सही । सु इकत्व वितर्क विचार गही । पुनि सूक्ष्म क्रिया प्रतिपात

कही । विपरीतक्रिया निरवृत्त लही ॥ १५ ॥ इन आदिक सर्व प्रकाश कियो । भविजीवन को शिवस्वर्ग दियो । पुनि मोक्ष विहार कियो जिनजी । सुखसागरमग्न चिरंगुण जी ॥ १६ ॥ अब मैं शरणा पकड़ी तुमरी । सुध लेऊं दयानिधिजी हमरी । भवव्याधि निवारकरो अबही । मत ढीलकरो सुख दो सबही ॥ १७ ॥

घत्ताछन्द-शीतलजिन ध्यावो भगति बढावो, ज्यों रत्न त्रय निधि पावो । भव दंद नसावो शिवथल जावो, फेर न भव वनमें आवो ॥ १८ ॥ ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा !

॥ छंद मालिनी ॥

अथ आशीर्वाद-दृढरथ सुत श्रीमान, पंच कल्याण धारी । तिनपद युग पद्म, जो जजैं भक्ति धारी । सह सुख धन, धान्य दीर्घ सौभाग्य पावैं । अनुक्रम अरि दाहैं, मोक्षको सो सिधावैं ॥ १९ ॥

इत्याशीर्वाद. ॥ इति श्रीशीतलनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ १० ॥

११ अथश्रीश्रेयांसनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(वृन्दावन कृत) छंद गीता वा हरिगीता।

स्थापना—विमलनृप विमलासु अन,श्रीश्रेयांसनाथ जिनंद। सिंहपुरी जनमे सकल,हरिपूज धरी आनंद।
भवबंध ध्वंसन हेतलखि, मैं शरन आयो येव। थापो चर्णयुग उरकमलमें, जजन कारन देव ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आव्हाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ट तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक। छंद गीता वा हरिगीता।

जल—कलधौत वरन उत्तंग हिमगिर, पद्मद्रहतैं आवई। सुरसरित प्रासुक उदकसो भरि, भृंगधार चढावई
श्रेयांसनाथ जिनंद त्रिभुवन, वंद आनंदकंद है दुखदंद फंद निकंद पूरन, चंदजोत अमंद है ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—गोसीर वर करपूर कुकुम, नीरसंग घसों सही। भवताप भंजन हेत भवदधि,सेतचर्ण जजू यही।
श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन,वंद आनंदकंद है। दुख दन्द फन्द निकंद पूरण,चन्द जोत अमन्द है

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म, तप,ज्ञान,निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय संसार।
ताप रोग विनाशनाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–सितशाल शशि दुति शुक्तिसुंदर, मुक्तिकी उन हारहैं। भरथार पुंज धरत पदतर, अखय पद करतार हैं। श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन बंद आनंद कद हैं। दुख दन्द फन्द निकद पूरण, चन्द जोत अमन्द है। ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–शुध सुमन सुमन समान पावन,मलयतै मधु झंकरै। पदकमलतर धरते तुरत सो, मदन को मद क्षैकरै। श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन, वंद आनंद कंद है। दुख दन्द फन्द निकद पूरण,चन्द जोत अमन्द है। ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–यह परम मोदक आदिसरस, सवारि सुंदर चरु लियो। तुम वेदनी मदहरनलख, चर्चूं चरण शुचिकर हियो। श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन बंद आनंद कंद है। दुख दन्द फन्द निकंद पूरण, चन्द जोत अमन्द है। ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–संशय विमोह विभर्मतम, भंजन दिनंद समानहो। तातैं चरन ढिग दीप जोऊ, देहु अविचल

ज्ञान हो। श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन, बंद आनंद कंद है। दुख दन्द फन्द निकंद पूरण, चन्द जोत अमन्द है। ऊँ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–वर अगर तगर कपूर चूर, सुगंध भूर बनाईया। दहि अमर जिह्वविषै चरनढिग, करम भरम जराईया श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन, बंद आनंद कंद है। दुख दन्द फन्द निकंद पूरण, चन्द जोत अमन्द है। ऊँ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥

फल–सुरलोक अर नरलोकके फल, पक्व मधुर सुहावने। ले भगति सहित जजूं चरन, शिवपरम पावन पावने। श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन, बंद आनंद कद है। दुख दन्द फन्द निकंद पूरण, चन्द जोत अमन्द है। ऊँ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल मलय तंदुल सुमन चरु अरु, दीप धूप फलावली। करअर्घ चर्चूं चरण युग प्रभु, मोहितार उतावली। श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन, वद आनद कद है। दुख दन्द फन्द निकंद पूरण, चन्द जोत अमन्द है। ऊँ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ पंचकल्याणक। आर्या छन्द।

गर्भ–पुष्पोत्तर तज आये, विमला उर जेष्ठकृष्ण षष्ठी को। सुरनर मंगल गाये, मैं पूजूं नाशकरम दुष्ठी को। ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेंद्राय जेष्ठ कृष्ण षष्टी गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–जनमे फागुन कारी, एकादशि तीन ज्ञान दृगधारी। इक्ष्वाकवंश तारी, मैं पूजूं घोर विघ्न दुःख टारी॥ २॥ ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण एकादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–भवतन भोग असारा, लख त्यागो धीर शुद्ध तप धारा। फागुन वदी इग्यारा, मैं पूजूं पाद अष्ट परकारा॥ ३॥ ॐ ह्रींश्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण एकादशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–केवलज्ञान सु जानन, माघ वदी पूर्ण तित्थको देवा॥ चतुरानन भवभानन, बंदूं ध्यावूं करूं सुपद सेवा॥ ४॥ ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांस नाथ जिनेन्द्राय माघ कृष्ण अमावस्या ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–गिर सम्मेदतैं पायो, शिवथल तिथ पूर्णमासि सावनको। कलिसायुभ गुण गायो, मैं पूजूं आप निकट आवन को॥५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल पूर्णिमा मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ जयमाला । छन्द चंचलतरंग ।

महा अर्घ-शोभित तुंग शरीरसु जानो । चापअसी शुभलक्षण मानो । कंचनवर्ण अनुपम सोहे । देखत रूप सुरासुर मोहे ॥ १ ॥

छद पद्धडी । जै जै श्रेयांसजिन गुण गरिष्ठ । तुम पदयुग दायक इष्ट मिष्ट । जै शिष्ट शिरोमणि जगतपाल । जै भविसरोज गण प्रातकाल ॥ २ ॥ जै पंच महाव्रत गज सवार । ले त्यागभाव दल बल सुसार । जै धीरजको दलपति बनाय । सत्ताथित महा रणको मचाय ॥ ३ ॥ धर रत्न तीन तिहुं शक्तिसाथ । दश धरम कवच तपटोप माथ । जै शुक्ल ध्यान कर खडग धार । ललकारो आठो अरि प्रचार ॥ ४ ॥ तामें सबको पति मोह चंड । ताको ततखिन कर सहस खंड । फिर ज्ञान दरस प्रत्यूह हान । निजगुण गढलीनो अचल थान ॥ ५ ॥ शुचिज्ञान दरस सुख वीर्यसार । हुव समवशरण रचना अपार । तितभाखे तत्व अनेक धार । जाको सुन भव्य हिये विचार ॥ ६ ॥ निजरूप लहो आनंदकार । भ्रम दूर करनको अति उदार । पुन नय प्रमाण निक्षेपसार । दरसायो कर संशय प्रहार ॥ ७ ॥ तामे प्रमाण युग भेदयेव । परतक्ष परोक्ष राजै स्वमेव ॥ तामे प्रतक्ष के भेद दोय । पहिलो है संविवहार सोय ॥ ८ ॥ ताके युग भेद विराजमान । मति श्रुति सो है सुंदर महान । है परमारथ दुतियो प्रतक्ष । है भेद युगम ता मांहि दक्ष ॥ ९ ॥ एक यकदेश इक सर्वदेश । इक देश उभैविधि सहित वेश । वर अवधि सुमन

परजै विचार। है सकलदेश केवल अपार॥ १० ॥ चर अचर लखन युगपत प्रतक्ष । निरद्वंद्व रहित परपंच पक्ष। पुन हैं परोक्ष मह पंचभेद। समि रितअरु प्रतिभिज्ञान भेद, ।११। पुन तर्क और अनुमान मान। आगमयुत पन अब नय बखान। नैगम संग्रह व्यवहार गूढ। रिजु सूत्र शब्द अर समभिरूढ।१२। पुन एवंभूत सु सप्त येम। नय कहैं जिनेश्वर गुणजु तेम। पुन द्रव्यक्षेत्र अर काल भाव। निक्षेप चार विधि इम जनाव ॥ १३ ॥ इनको समस्त भाख्यो जिनेश। जा समझत भ्रम नहि रहत लेश। निज ज्ञान हेत यह मूल मंत्र। तुम भाखे श्रीजिनवर स्वतंत्र ॥ १४ ॥ इत्यादि तत्व उपदेश देय। हनि शेष करम निरवान लेय। निर्वाण जजत वसु द्रव्यईश। वृंदावन नित प्रति नमत शीस ॥ १५ ॥

घत्ता छन्द–श्रेयांस जिनेशा सुगुण महेशा, वज्र धरेशा ध्यावत हैं। हम निशिदिन वंदें पाप निकंदें, ज्यों सहजानन्द पावत हैं ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वाद। सोरठा–जो पूजै मनलाय, श्रेयांसनाथ पदपदमको। पावै इष्ट अघाय, अनुक्रम सो शिवतिय वरै ॥१७॥

इत्याशीर्वादः। इति श्रीश्रेयांसनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ ११ ॥

१२ अथ श्रीवासुपूज्य जिन पूजा प्रारभ्यते।

(वृन्दावनकृत) कवित्त।

स्थापना–श्रीमत वासुपूज्य जिनवरपद, पूजन हेत हिये उमगाय।
थापूं मनवचतन शुचि करके, जिनकी पाटल देव्यामाय॥
महिष चिन्ह पगलसै मनोहर, लालवरन तन समतादाय।
सो करुणा निधि कृपादृष्टि कर, तिष्टहु सुपर तिष्ट इह आय॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ट ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक। छंद जोगीरासा (आचलीबंध)

जल–गंगाजलभर कनक कुंभमें, प्रासुक गंध मिलाईं। करम कलंक विनाशन कारण, धार देत हरखाईं॥
जिनपद पूजूं लवलाईं, जिनपद पूजूं मनलाईं। वासुपूज्य वसु पूजत नुतपद, वासव सेवत आईं॥
बालब्रह्मचारी लख जिनको, शिवतिय सन्मुखधाईं॥ ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—कृष्णागर मलयागिर चंदन, केशर संग घसाई। भव आताप निवारन कारन, पूजूं मन चितलाई॥
जिनपद पूजूं लवलाई, जिनपद पूजूं मनलाई। वासुपूज्य वसुपूजत नुतपद, वासव सेवत आई॥
बाल ब्रह्मचारी लख जिनको, शिवतिय सन्मुख धाई॥ ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म
तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा तापरोगविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा

अक्षत—देवजीर सुखदास शुद्धवर, कंचन थाल भराई। पुंज धरत तुम चरनन आगे, तुरत अखैपद पाई॥
जिनपद पूजूं लवलाई, जिनपद पूजूं मन लाई। वासुपूज्य वसुपूजत तुमपद, वासव सेवत आई॥
बालब्रह्मचारी लख जिनको, शिवतिय सन्मुख धाई॥ ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,
तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प—पारिजात सतान कल्पतरु, जनित सुमन बहुलाई। मीनकेतु मद भंजन कारण, तुम पद पद्म चढाई॥
जिन पद पूजूं लवलाई, जिनपद पूजूं मनलाई। वासुपूज्य वसुपूजत नुतपद, वासव सेवत आई॥
बाल ब्रह्मचारी लख जिनको, शिवतिय सन्मुख धाई॥ ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,
तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

नैवेद्य—नव्य गव्य आदिक रस पूरित, नेवज तुरत उपाई। क्षुधारोग निवारन कारन, तुम्हें जजूं सिरनाई॥
जिनपद पूजूं लवलाई, जिन पद पूजूं मनलाई। वासुपूज्य वसुपूजत नुतपद, वासव सेवत आई॥
बाल ब्रह्मचारी लख जिनको, शिवतिय सन्मुख धाई॥ ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,

तप, ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दीप–दीपकजोति उदोत होत वर, दश दिश में छबिछाई॥ तिमिरमोहनाशक तुमको लख, जजूं चरण हरषाई॥ जिन पद पूजूं लवलाई जिनपद पूजूंमनलाई। वासुपूज्य वसुपूजत नुतपद वासवसेवत आईं॥ बाल ब्रह्मचारीलख जिनको शिवतिय सन्मुखधाई॥ ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रायगर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनायदीपंनिर्वपामीतिस्वाहा॥

धूप–दशविध गंधमनोहरलेकर,वीतिहोलमेंडाई॥ अष्ट कर्म यह दुष्ट जरत हैं,धूम धूम सुउडाई॥ जिन पद पूजूलवलाईजिनपद पूजू मन लाई। वासुपूज्य वसु पूजत नुतपद वासव सेवत आई॥ बाल ब्रह्मचारीलख जिनको शिवतियसन्मुख धाई॥ ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीतिस्वाहा॥

फल–सुरस सुपक्व सुपावन फलले,कंचन थाल भराई॥ मोक्षमहाफलदायकलख,प्रभुभेट धरूंगुणगाई। जिनपद पूजूंलवलाई,जिन पद पूजूंमन लाई। वासुपूज्य वसुपूजत नुत पद वासव सेवत आई॥ बालब्रह्मचारी लख जिनको शिवतियःसन्मुख धाई॥ ॐ ह्रीं श्रीवासु पूज्य जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तयेफलंनिर्वपामीतिस्वाहा।

अर्घ–जलफलद्रव्य मिलाय गायगुण,आठोंअगनमाई॥शिव पद राजत हेत श्रीपति,निकट धरूंयहलाई जिनपद पूजूं लवलाई जिन पदपूजूंमन लाई। वासुपूज्य वसुपूजतनुतपद वासव सेवत आई।बाल

ब्रह्मचारीलख जिनको शिवतियसन्मुखधाई ॥ उों ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा।

अथपंचकल्याणक। छंदपाईता।

गर्भ–कल छट्ठीअषाढ सुहायो। गर्भागममंगल पायो। दसमें दिवतैं इत आए। शत इंद्रजजैं सिरनाये॥१॥
उों ह्रीं श्रीवासु पूज्य जिनेन्द्राय आषाढ कृष्ण षष्ठी गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

जन्म–कल चौदस फागुण जानो। जनमें जगदीश महानो॥ हरि मेरु जजैं तब जाई। हम पूजत हैं चितलाई॥ २॥ ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

तप–तिथि चौदस फागुण श्यामा। धरियो तप श्रीअभिरामा॥ नृप सुंदर घर पय पायो। हम पूजत अति सुख पायो॥ ३॥ ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–सितमाघहि द्वितिया सोहै। लह केवल आतम जोहै॥ अनअंत गुणाकर स्वामी। नित बंदू त्रिभुवन नामी॥ ४॥ ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय माघ शुक्ल द्वितीया ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–सित भादव चौदस लीनो। निरवान सुथान प्रवीनो॥ पुरचंपा थानक सेती। हम पूजत नित हित हेती ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भाद्र पद शुक्ल चतुर्दशी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथजयमाला। दोहा।

महाअर्घ–चंपा पुरमें पंचवर, कल्याणक तुम पाय। सत्तर धनु तन सोहनो, जै जै जै जिनराय॥

छंद मोतीदाम–महा सुखसागर आगर ज्ञान। अनंत सुखामृत सुक महान ॥ महाबल मंडित खंडित काम। रमाशिवसंग सदा विसराम ॥ २ ॥ सुरेंद्र फणेंद्र खगेंद्र नरेंद्र। मुनिंद जजैं नित पादरविंद ॥ प्रभु तव अंतर भाव विराग। सुबालहितैं व्रतशील सुहाग ॥ ३ ॥ कियो नहि राज उदास सरूप। सुभावन भावत आतम रूप॥ अनित्य शरीर प्रपंच समस्त। चिदातम नित्य सुखाश्रितवस्त ।४। अशर्ण नही कोऊ शर्णं सहाय। जहांजिय भोगत कर्म विपाय ॥ निजातमको परमेश्वर शर्ण। नहीं इनके विन आपद हर्णं ॥५॥ जगत यथाजल बुद्‌बुद येव। सदा जिय एक लहै फलभेव ॥ अनेक प्रकार धरी यह देह। भ्रमें भवकानन आनन नेह ॥ ६ ॥ अपावन सात कुधात भरीय। चिदातम शुद्ध सुभाव धरीय ॥ धरे इनसे जब नेह तबेव। सु आवत कर्म तबे वसुभेव ॥ ७ ॥ जबे तनभोग जगत्त उदास। धरे तब संवर निर्जर आस ॥ करे जब कर्म कलंक विनास। लहे तब मोक्ष महा सुखरास ॥ ८ ॥

तथा यह लोक नराकृत नित्त। विलोकिय ते षटद्रव्य विचित्त॥ सु आतम जानन बोध विहीन। धरै किन तत्व प्रतीत प्रवीन॥ ९॥ जिनागम ज्ञान रु संयम भाव। सबै निजज्ञान विना विरसाव॥ सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल। सुभाव सबै जिहतै शिवहाल॥ १०॥ लहो सब योग सुपुण्य वसाय। कहोकिम दीजिये ताहि गमाय॥ विचारत यों लौकांतिक आय। नमै पद पंकज पुष्प चढाय॥ ११॥ कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार। प्रबोधि सुयेम कियो जु विहार॥ तबै सुधर्मतनो हरि आय। रच्यो शिविका चढि आप जिनाय॥ १२॥ धरे तप पाय सुकेवल बोध। दियो उपदेश सुभव्य सबोध॥ लयो फिर मोक्ष महा सुखरास। नमै नितभक्त सोई सुख आस॥ १३॥

घत्ताछन्द–नित वासव वंदित पापनिकंदित, वासुपूज्य व्रत ब्रह्मयती॥ भव संकल खंडित आनंद मंडित, जैजैजै जैवंत यती॥ १४॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वाद। सोरठा–वासुपूज्य पदसार, जजै दरव विध भावसो॥ सो पावै सुखसार, भुक्ति मुक्ति को जो परम॥ इत्याशीर्वादः। इति श्रीवासुपूज्यजिन पूजा संपूर्णा॥ १२॥

१३ अथ श्रीविमलनाथजिन पूजा लिख्यते।

(वृन्दावनकृत) छंद मदावलिप्तकपोल।

स्थापना—सहस्रार दिवत्याग, नगर कंपिला जनम लिय। कृतधर्मा नृपनंदन, मातु जयसेन धर्मप्रिय॥
तीनलोक चरनंद, विमलजिन विमल विमलकर। थापूं चरण सरोज, जजनके हेत भाव धर॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आव्हाननम्।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री विमल नाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्।

अथ अष्टक। सोरठा। (चाल मनसुखरायजी कृत नंदीश्वर अष्टक की)।

जल—कंचन झारी वारि, पदम द्रहको नीरले। तृषारोग निरवार। विमल विमलगुण पूजिये।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म, मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन—मलयागर करपूर, देवबल्लभा संग घस। हर मिथ्यातप भूर। विमल विमल गुण पूजिये।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय ससारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–बासमती सुखदास,श्वेत निशापति को हंसै। पूरे वांछित आस। विमल विमलगुण पूजिये।

उों ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–पारिजात सुखवास, सुंदर शुद्ध सुगधमय। मदन दहन के काज। विमल विमल गुण पूजिये।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–नव्य गव्य रसपूर, सुवरन थार भराइकै। क्षुधा वेदनीचूर। विमल विमलगुण पूजिये।

उों ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–माणिक दीप अखंड, गोछाई वर मोदसो। हरो मोहतम चंड। विमल विमल गुण पूजिये।

उों ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, नप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–अगर तगर घनसार, देवद्वार कर चूर वर। खेवूं वसु अरिजार, विमल विमलगुण पूजिये।

ॐह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–श्रीफल सेव अनार, मधुररसीले पावने। मोक्ष फलनकेसार। विमल विलमगुण पूजिये। उोंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाणपंचकल्याण प्राप्तायमोक्ष फल प्राप्तये फलंनिर्वपामीतिस्वाहा

अर्घ–आठों दरब सवार, मनसुख दायक पावने। जजूं अरघ भर थार। विमल विमलगुण पूजिये।

उों ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घं पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याणक। छन्द द्रुतविलंवित वा सुंदरी।

गर्भ–गरभ जेठवदी दशमी भनो। परम पावन सोदिन सोभनो। करत सेव शची जननी तनी। हम जजैं पदपद्म शिरोमनी॥ १॥ उों ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण दशमी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–शुकल माघ चतुर तिथि जानिये। जनम मंगल तादिन मानिये। हरि तबै गिरिराज विषै जजे। हम समर्चत आनंदको सजै॥ २॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल चतुर्थी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–तपधरे सित माघ चतुर भली। निज सुधातम ध्यावत है रली। हरि फणेश नरेश जजें तहां। हम जजैं नित आनंदसो यहां।३। ॐह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माघशुक्ल चतुर्थी तपकल्याणकायअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा।

ज्ञान–विमल माघ छटी हन घातिया। विमल बोध लियो सब भासिया। विमल अर्घ चढाय जजूंअबे विमल आनंद देऊ हमें सबे ॥४॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माघशुक्ल षष्टी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण–भ्रमर साढ वसू अति पावनो। विमल सिद्ध भये मन भावनो। गिरि समेद हरी तित पूजिया। हम जजैं इत हर्ष धरें हिया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय आषाढ कृष्णाष्टमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–गगन चहत उडगण गमन,छित तिथिके छहजेम। तिम गुण वरनन वरनना,मांहि होयतव केम १

साठ धनुष तन तुंग है,हेम वरण अभिराम। वर वराह पद अंकलख,पुनि पुनि करूं प्रणाम॥२॥

छंद त्रोटक-जय केवल ब्रह्म अनंत गुनी। तुम ध्यावत शेष महेश मुनी। परमातम पूरन पाप हनी। चित चिंतत दायक इष्ट घनी॥ ३ ॥ भव आतप ध्वंसन इंद्र करं। वर सार रसायण शर्म भरं। सब जन्म जरा मृत दाघहरं। शरनागत पालन नाथ वरं॥४॥ नित संत तुम्हें इन नामन ते। चित चिंतत हैं गुण गामिन ते। अमलं अचलं अटलं अतुलं। अरलं अछल अथलं अकुलं ॥५॥ अजरं अमरं अडरं अहरं। अपरं अभरं असरं अनरं। अमलीन अछीन अरीन हने। अमतं अगतं अरतं अघने ॥ ६ ॥ अक्षधा अतृषा अभया तुमहो। अमदा अगदा अवदा तुमहो। अविरुद्धअक्रुद्ध अमान धुना। अतलं

असल अन अंतगुना॥७॥अरसं सरसं अकलं सकलं। अवचं सवचं अमनं सवलं। इनआदि अनेक प्रकार सही। तुमको जिनसंत जपै नितही॥ ८॥ अब मैं तुमरी शरना पकरी। दुख दूरकरो प्रभुजी हमरी। हम कष्ट सहे भव कानन में। कुनिगोद तथा थल आनन में॥९॥ तित जामन मनं सहे जितने। कहि केम सकैं तुमसो तितने। सुमुहूरत अंतरमांहि धरैं। छह त्रय त्रय छ छहकाय खरैं॥ १० ॥ क्षिति वन्हि वयारिक साधरना। लघु थूल विभेदनिसौ भरनो। परतेक वनस्पति ग्यार भये। छ हजार दुवादसभेद लहे॥११॥ सब द्वै त्रै भू षट छः सुभया। इक इंद्रिय की परजाय लया। जुगेंदिय काय असी गहियो। तिय इंद्रिय साठन में रहियो॥ १२॥ चतुरिंद्रिय चालिस भेद धरा। पन इंद्रियके चवतीस वरा। सब ये तन धार तहां सहियो। दुख घोर चितारिन जात हियो॥१३॥ अब मो अरदास हिये धरिये। दुखदंद सबै अबही हरिये। मन वंछित कारज सिद्धि करो। सुखसार सबै घर रिद्धि भरो॥ १४॥

घत्ताछन्द–जय विमल जिनेशा नुतना केशा, नागेशा नरईश सदा। भवताप अशेषा हरन निशेशा दाता चिंतित शर्मसदा॥ १५॥ ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वाद दोहा–श्री मत विमल जिनेशपद, जो पूजे मन लाय। पूरे वंछित आसतसु, मैं पूजूं गुणगाय।

इत्याशीर्वादः॥ इति श्री विमलनाथ निज पूजा संपूर्णा॥ १३॥

१४ अथ श्रीअनन्तनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते।

(वृन्दावन कृत) कवित्त।

स्थापना–पुष्पोत्तर तज नगर अयुध्या, जनम लियो सूर्या उर आय।
सिंहसेन नृपके नंदन, आनंद असेस भरे जगराय।
गुण अनंत भगवंत धरे, भवदंद हरे तुम हे जिनराय।
थापतहूं त्रयवार उचरकै, कृपासिंधु तिष्टहु इत आय॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आव्हाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथ अष्टक। छंद गीता।

जल–शुचिनीर निर्मल गंगको ले, कनक भृंग भराईया। मलकरम धोवन हेत, मन वच काय धार ढराईया।
जगपूज परम पुनीत मीत, अनंत संत सुहावनो। शिवकंत वंत महंत ध्यावों, भ्रंत तंत नसावनो।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
जन्ममृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन-हरिचंद व दलीनंद कुंकुम, ददताप निकंद है। सब पापरुज संताप भंजन, आपको लख चंद है।
जग पूज परमपुनीतमीत, अनन्तसंत सुहावनो। शिव कन्त वन्त महन्त ध्यावो भ्रन्त तन्त नसावनो।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा
ताप रोग विनाशनाय, चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत-शितशाल द्युति उजियाल, हीरहिमाल गुलकनितेघनी। तसु पुंज तुमपदतर धरत, पद लहत स्वच्छ सुहावनी। जग पूज परमपुनीत मीत, अनन्तसंत सुहावनो। शिवकन्त वन्त महन्त ध्यावो भ्रन्त तन्त नसावनो। ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प-पुष्कर अमरतर जनितवर, अथवा अवरकर लाईया। तुम चरन पुष्कर तरधरत, शरशूल सकल नसाईया। जग पूज परमपुनीत मीत, अनन्तमत सुहावनो। शिवकन्त वन्त महन्त ध्यावो भ्रन्त तन्त नसावनो। ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य-पकवान नैना घ्राण रसना, को प्रमोद सुदाय है। सो लाय चरन चढाय, रोग क्षुधाय नाश करायहै
जग पूज परमपुनीत मीत, अनन्तसंत सुहावनो। शिवकन्त वन्त महन्त ध्यावो भ्रन्त तन्त नसावनो।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा

रोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–तममोह भानन जानआनन, आनशनं गहीअबै। वर दीप धारूं वारि तुमढिग, सुपर ज्ञान जु दो सबै।
जग पूज परमपुनीत मीत, अनन्तसंत सुहावनो। शिवकन्त वन्त महन्तध्यावो भ्रन्त तन्त नसावनो।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
मोहांधकार रोग विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–यह गंध चूर दशांग सुंदर, धूम धुज में खेय हैं। वसुकर्म भर्म जराय तुमढिग, निज सुधातम वेय हैं।
जग पूज परमपुनीत मीत, अनन्तसंत सुहावनो। शिव कन्त वन्त महन्त ध्यावो भ्रन्त तन्त नसावनो।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट
कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–रस थकपक्व सुभक्व चक्व, सुहावने मृदुपावने। फल सारवृंद अमंद ऐसो, लाय पूज रचावने। जग
पूज परमपुनीत मीत, अनन्त संत सुहावनो। शिव कन्त वन्त महन्त ध्यावो भ्रन्ततन्त नसावनो।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–नीर चंदन शालि नंदन, समनचरु दीवाधरूं। अरुधूप फलयुत अर्घ कर, कर जोरयुग विनती करूं।
जग पूज परमपुनीतमीत, अनन्तसंत सुहावनो। शिवकन्त वन्त महंत ध्यावो भ्रंत तन्त नसावनो।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याणक। छंद सुंदरी वा द्रुतविलंबित।

गर्भ–असित कार्तिक एकम भावनो। गर्भको दिनसो गिन पावनो। किय शची तित चर्चन चावसो। हम जजैं इतआनन्द भावसो॥ १॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा॥

जन्म–जनम जेठवदी तिथि द्वादसी। सकल मंगल लोक विषैलसी। हरि जजैं गिरिराज समाजतैं। हम जजैं इत आतम काजतैं॥ २॥ ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

तप–भव शरीर विनश्वर भाईयो। असित जेठ दुवादस गाईयो। सकलइंद्र जजैं तित आय कै। हम जजैं इत मंगल गाय कै॥३॥ ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय जेष्ठ कृष्ण द्वादशी तप कल्याण काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–असित चैत अमावस को सही। परम केवलज्ञान जग्यो तही। लहि समव श्रुति धर्म धुरंधरो। हम समर्चत विघ्न सबै हरो॥ ४॥ ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण अमावस्या ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण—असित चैत्र अमावस गाईयो। अघतघाति हने शिवपाईयो। गिरिसमेद जजैं हरिआईके। हम जजैं पद प्रीति लगाईके ॥५॥ ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय चैत्रकृष्ण अमावस्या मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला ॥ दोहा ॥

महाअर्घ—तुमगुण वरनन एम जिम। खं विहाय करमान। तथामेदनी पदनि कर कीनो चहत प्रमान।
जय अनंत रवि भव्यमन, जलज वृंद विहसाय। सुमतिकोक तियथोक सुख, वृद्धकियो जिनराय।

छंद नयमालिनी वा चडी—जय अनंत गुणवंत नमस्ते। शुद्धध्येय नित संत नमस्ते। लोकालोक विलोक नमस्ते, चिन्मूरति गुण थोक नमस्ते ॥ ३ ॥ रतन त्रय धर धीर नमस्ते। करम शत्रुवर वीर नमस्ते। चार अनंत महंत नमस्ते। जै जै शिवतिय कंत नमस्ते ॥ ४ ॥ पंचाचार विचार नमस्ते। पच करण मद हार नमस्ते। पंच परावत चूर नमस्ते। पंचम गति सुखपूर नमस्ते ॥ ५ ॥ पंचलब्धि धरणेश नमस्ते, पंच भाव सिद्धेश नमस्ते। छहो द्रव्यगुण ज्ञान नमस्ते, छहों काल पहचान नमस्ते ॥६॥ छहो काय रक्षेश नमस्ते, छह सम्यक् उपदेश नमस्ते। सप्तविषन वन वन्हि नमस्ते। जै केवल अपरन्हि नमस्ते ॥७॥ सप्ततत्वगुण भनन नमस्ते। सप्त शुभ्रगति हनन नमस्ते। सप्त भंग के ईश नमस्ते। सातो नय कथनीश नमस्ते ॥ ८ ॥ अष्ट कर्ममल दल्ल नमस्ते। अष्ट योग निरशल्य नमस्ते।

अष्टम धराधिराज नमस्ते। अष्ट गुनन सितराज नमस्ते ॥ ९ ॥ जै नव केवल प्राप्त नमस्ते । नौ पदार्थ थित आप्त नमस्ते। दसौं धरम धरतार नमस्ते। दसौं बंध परिहार नमस्ते ॥ १०॥ विघ्न महीधर विज्जु नमस्ते। जै ऊरधगति रिज्जु नमस्ते। तन कनकंदुति पूर नमस्ते। इक्ष्वाकं जगसूर नमस्ते ११ सही अंक निशंक नमस्ते। चित चकोर मृगअक नमस्ते । धनुपचास तन उच्च नमस्ते। कृपासिंधु गुण सुच्च नमस्ते ॥ १२ ॥ राग दोष मदटार नमस्ते । निज विचार दुखहार नमस्ते । सुर सुरेश गणवृन्द नमस्ते। वृन्द करो सुख कंद नमस्ते ॥ १३ ॥

घत्ताछन्द–जै जै जिनदेवं सुरकृत सेवं, नितकृत चित्त हुलास धरं। आपद उद्धारं समतागारं, वीतराग विज्ञान वरं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंच-कल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः–छंद मदावलिप्तकपोल। जो जन मन वच काय,लाय जिनजजै नेहधर। वा अनुमोदन करै करावे, पढै पढावे पाठवर। ताके नित जो होय सु मंगल,आनंद दाई। अनुक्रम ते निरवान लहै, सामग्री पाई ॥ १५ ॥

इत्याशीर्वादः ॥ इति श्रीअनंतनाथ जिन पूजा संपूर्णा ।१४।

१५ अथ श्रीधर्मनाथ जिन पूजा लिख्यते।

(वृंदावनकृत) छंद माधवी ॥

स्थापना–तजकै सर्वारथ सिद्ध विमान सु, भानुके आन आनंद बढायो।
जगमात सुव्रतके नंदन होय, भवोदधि डूबत जंतु कढायो ॥
जिनको गुण नामहि माहि प्रकाश है, दासनको शिवस्वर्ग पठायो।
तिनके पद पूजनहेत त्रिवारसु, थापतहूं यह फूल चढायो ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक (छंद जोगीरासा)

जल–मुनिमनसम शुचिसीर नीर, अति मलय मेल भर झारी। जन्म जरामृत ताप हरनको, चरचूं चरन तुम्हारी॥ पर्म धर्म सिमर मन, धर्म जिन अशरण शरण निहारी। पूजूं पाय गाय गुण सुन्दर, नाचूं दे दे तारी॥ ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन–केशर चंदन कदली नंदन, दाह निकंदन लीनो। जलसंग घस लस शशी समकर भव आताप हरीनो ॥ परम धर्म सिमर मन, धर्म जिन अशरण शरण निहारी। पूजूं पाय गाय गुण सुन्दर, नाचूं दे दे तारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोम विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–जलज जीर सुखदास हीर, हिम नीर कीर सम लायो। पुंज धरत आनंद भरत, भवदंद हरत हरषायो ॥ परम धर्म सिमर मन, धर्मजिन अशरण शरण निहारी। पूजूं पाय गाय गुण सुन्दर, नाचूं दे दे तारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–सुमन सुमनसम सुमन थालभर, सुमनवृंद विहंसाई। सुमन्मथमद मथनके कारण, चरचूं चरण चढाई ॥ परम धर्म सिमर मन, धर्मजिन अशरण शरण निहारी। पूजूं पाय गाय गुण सुन्दर, नाचूं दे दे तारी। ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–घेवर बावर अर्ध चंद्र सम, छिद्र सहस्र विराजै। सुरस मधुर तासों पदपूजत, रोग असाता भाजै ॥ परम धर्म सिमर मन, धर्मजिन अशरण शरण निहारी। पूजू पाय गाय गुण सुन्दर, नाचूं दे दे तारी॥ ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग

विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–सुन्दरनेह सहितवर दीपक, तिमिर हरण धर आगे। नेह सहित गाऊंगुण श्रीधर, ज्यूं सुबोध उर जागे॥ परम धर्म सिमर मन, धर्मजिन अशरण शरण निहारी। पूजूं पाय गाय गुण सुदर, नाचूं दे दे तारी॥ ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–अगर तगर कृष्णागर तर, दिवहरि चंदन करपूरे। चूरखेय जल जवन मांहि, जिम करम जरैं वसुकूरे॥ परम धर्म सिमर मन, धर्मजिन अशरण शरण निहारी। पूजूं पाय गाय गुण सुन्दर, नाचू देदे तारी॥ ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–आम्र कम्रक अनारसार, फल भार मिष्ट सुखदाई। सो ले तुमढिग धरहु कृपानिधि, देहु मोक्ष ठकुराई। परम धर्म सिमर मन, धर्मजिन अशरण शरण निहारी। पूजूं पाय गाय गुण सुन्दर, नाचूं देदे तारी॥ ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–आठों द्रव्य साज शुचित हर,हरषि हरषि गुण गाई। वाजत द्रम द्रम द्रम मृदंग गत, नाचत ताथेई थाईं। परम धर्म सिमर मन, धर्मजिन अशरण शरण निहारी। पूजूं पाय गाय गुण सुन्दर,

नाचूं देदे तारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। राग टप्पा

चाल यह है–खोयो रे गवार तैं, सारो दिन योंही खोयो ॥

गर्भ–तेरस कृष्ण वैशाख हो, गर्भ दिवस अविकार, जग जन वांछित ।
पूजो हो अवार, धर्म जिनश्वर पूजो ॥ पूजो हो अवार ॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय वैशाखकृष्ण त्रयोदशी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–शुकल माघ तेरस लयो हो, धर्म धरम अवतार, सुरपति सुरगिरि पूजो ॥
पूजो हो अवार, धर्म जिनेश्वर पूजो, पूजो हो अवार।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय माघशुक्ल त्रयोदशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–माघ शुकल तेरस लयो हो, दुर्धर तप अविकार, सुर ऋषि सुमन तैं पूजो॥
पूजो हो अवार, धर्म जिनेश्वर पूजो, पूजो हो अवार।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय माघ शुक्ल त्रयोदशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–पौष शुकल पूनम हने अरि, केवल लहि भवितार, गनसुर नरपति पूजो ॥
पूजो हो अबार, धर्म जिनेश्वर पूजो, पूजो हो अबार ।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय पौष शुक्लपूर्णिमा ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण–जेष्ठ शुकल तिथि चौथ की हो, शिव समेद तैं पाय, जगत पूज्य पद पूजो ॥
पूजा हो अबार, धर्मजिनेश्वर पूजो, पूजो हो अबार ।
ॐ ह्रींश्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला । दोहा ।

महाअर्घ–घनाकारकर लोकपट, सकल उदधि मस तत । लिखे शारदा कलम गही, तदपि न तव गुणअंत॥

छंद पद्धड़ी–जै धरमनाथ जिनगुण महान । तुम पद को मैं नित धरूं ध्यान ॥ जै गरभ जनम तप ज्ञान युक्त । वर मोक्ष सुमंगल शर्म भुक्त ॥ २ ॥ जै चिदानंद आनंद कंद । गुण वृंद सुध्यावत मुनि अमद ॥ तुम जीवनिके विनहेत मित्त । तुमही हो जिन जगमे पवित्त ॥३॥ तुम समवसरण में तत्वसार। उपदेश दियो है अति उदार ॥ ताको जे भवि निज हेत चित्त। धारे ते पावैं मोक्ष वित्त ॥ ४ ॥ मैं तुम मुख देखत आज पर्म । पायो निज आतम रूप धर्म ॥ मोको अब भव भयते निकार । निर्भय पद दीजै परम सार ॥ ५ ॥ तुम सम मेरो जग में न कोय । तुमही तैं सवाबध काज होय॥ तुम दया धुरंधर धीर

चन्दन–वरबावन चंदन कदलीनंदन, घन आनंदन सहितघसो ॥ भवताप निकंदन ऐरानंदन, वंदि अमंदन चरण वसो ॥ श्री शान्ति जिनेशं नुत शक्रेश, वृष चक्रेशं चक्रेशं ॥ हन अरि चक्रेशं हे गुण धेशं, दयामृतेशं मक्रेशम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारातापरोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत–हिमकरकर लज्जित मलय सुसज्जित, अच्छत जज्जित भरथारी ॥ दुःखदारिद गज्जत सद पद सज्जत, भव भय भज्जत अतिभारी ॥ श्री शान्तिजिनेशं, नुत शक्रेशं, वृष चक्रेशं चक्रेशं ॥ हन अरि चक्रशं हे गुण धेशं. दयामृतेशं, मक्रेशम् ॥ ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा।

पुष्प–मंदार सरोजंकदली जोजं, पुज भरोजं मलय भरं ॥ भर कंचन थारी तुम ढिग धारी, मदन बिदारी धीर धरं ॥ श्री शांनि जिनेशं नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं ॥ हन अरिचक्रेशं हेगुणधेशं दयामृतेशं मक्रेशम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–पकवान नवीने पावन कीने, षटरस भीने सुखदाई ॥ मन मोहन हारेक्षुधाविदारे, आगेधारे गुणगाई ॥ श्री शान्ति जिनेशं नुतशक्रेशं, वृष चक्रेशं चक्रेशं ॥ हन अरि चक्रेशं हेगुणधेशं, दया मृतेशं मक्रेशम् ॥ ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण

प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–तुम ज्ञानप्रकाशे भ्रमतम नाशे, ज्ञेय विकाशे सुखराशे ॥ दीपक उजियारा यातेधारा, मोह निवारा निज भासे ॥ श्री शान्ति जिनेशं नुतशक्रेशं,वृष चक्रेशं चक्रेशं ॥ हन अरि चक्रेश हेगुणधेशं,दया मृतेशं मक्रेशम् ॥ ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्तायमोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–चंदन करपूरं कर वर चूरं,पावक भूरं मांहि जरं॥ तसु धूम उडावैं नाचत जावैं,अलि गुंजावैं मधुर स्वर श्री शांतिजिनेश नुत शक्रेश,वृषचक्रेशं चक्रेशं । हन अरि चक्रेशंहेगुण धेशं, दया मृतेशं मक्रेशम् । ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–बादाम खजूरं दाडिम पूर,निंबुक भूरं ले आयो ॥ तासो पद जज्जे शिव फल सज्जे, निज रस रज्जे उम गायो ॥ श्री शांति जिनेशं नुतशक्रेशं, वृष चक्रेशं चक्रेश ॥ हन अरि चक्रेशं हे गुणधेशं,दया मृतेशं मक्रेशम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीतिस्वाहा ।

अर्घ–वसु द्रव्य सवारी तुम दिग धारी, आनंदकारी दृगप्यारी ॥ तुम हो भवितारी करुणाधारी, यातें थारी शरनारी ।। श्री शांति जिनेशं नुत शक्रेशं,वृष चक्रेशं शक्रेशं । हन अरि चक्रेशं हेगुणधेशंदया

मृतेशं मकेशं ॥ ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंच कल्याणक। छंद सुन्दरी वाद्रुत विलंबित।

गर्भ–असित सातय भादव जानिये। गरभ मंगल तादिन मानिये॥ शचिकियो जननी पद चर्चनं। हम करें इत ये पद अर्चनं ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीशांति नाथ जिनेन्द्राय भाद्रपद कृष्ण सप्तमी गर्भ कल्याण काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म–जन्मजेठ चतुर्दशि श्याम है। सकल इंद्रसु आगत धाम है॥ गज पुरे गजसाज सवै तवै। गिरि जजें इत मैं जज हूं अबै ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री शांति नाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी जन्म कल्याण काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तप–भव शरीर सुभोग असार है। इम विचार तवै तपधार है ॥ भ्रमर चौदस जेठ सुहावनी। धरम हेत जजूं गुण पावनी ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान–शुक्ल पौष दशै सुखरास है। परम केवलज्ञान प्रकाश है। भव समुद्र उधारन देवकी, हम करें नित मंगल सेवकी ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेंद्राय पौष शुक्ल दशमी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

निर्वाण—असित चौदस जेठ हनेअरी। गिरि समेद थकी शिवतियवरी। सकल इंद्र जजें तित आयके। हम जजें इत मस्तक नायके॥५॥ ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेंद्राय जेष्ठकृष्णचतुर्दशी मोक्षकल्याण काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ जयमाला। छंद रथोद्धता।

महा अर्घ—शांति शांतिगुणमंडितेसदा। जाहि ध्यावतसुपंडिते सदा। मैं तिन्हें भगति मंडिते सदा। पूजहूं कलुष हंडिते सदा॥१॥ मोक्ष हेत तुमहीदयाल हो! हे जिनेशगुणरत्नमाल हो॥ मैं अबै सुगुण दाम ही धरूं। ध्यावते तुरत मुक्तितिय वरूं॥२॥

छंद पद्धरी॥ जै शांतिनाथ चिद्रूपराज। भवसागर में अद्भुत जहाज॥ तुम तजसर्वारथ सिद्ध थान। सर्वारथ युत गजपुर महान॥३॥ तित जन्म लियो आनंद धार। हरि तत छिन आयो राजद्वार॥ इंद्राणी जाय परसूत थान। तुमको कर मेले हरष मान॥४॥
हरि गोद देय सो मोद धार। सिर चमर अमर ढारत अपार॥ गिरराज जाय तितसिला पांडु। तापै थापो अभिषेक मांडु॥५॥ तित पंचम उदधितनो सुवारि। सुर कर कर कर लाये उदारि॥ तब इंद्र सहसकर करि अमंद। तुमसिर धारा ढारो सुनंद॥६॥ अघ घघ घघ घघ धुनि होत घोर। भभ भभ भभ धधधध कलस शोर॥ टमटम टमटम वाजत मृदंग। झननन नननन नन नूपुरंग॥७॥ तननन

नन नन नन तनन तान। घननन नन घटा करत ध्वान॥ ताथेई थेई थेई थेई थेई सुचाल। युत नाचत नावत तुमहि भाल ॥८॥ चटचट चट अटपट नटत नाट। झटझटझट हटनट शट विराट॥ इम नाचत राचत भगत रंग। सुरलेत जहां आनंद संग ॥ ९ ॥ इत्यादि अतुल मंगल सुठाठ। तित बनो जहां सुरगिर विराट॥ पुनकर नियोग पितु सदन आय। हरि सौंपो तुम तित वृद्ध थाय ॥ पुन राजमाहि लहि चक्ररत्न। भोग्यो छखंड कर धरम यत्न ॥ पुन तप धर केवल रिद्धि पाय। भवि जीवनि को शिवमग वताय ॥ ११ ॥ शिवपुर पहुचे तमहे जिनेश। गुणमडित अतुल अनंत भेश ॥ मैं ध्यावत हूं नित शीस नाय। हमरी भवबाधा हर जिनाय ॥ १२ ॥ सेवक अपनो निज जान जान। करुणाकर भवभय भान भान ॥ यह विघ्न मूलतरु खंडखंड। चित चिंतन आनंद मंड मंड ॥ १३ ॥

घत्ताछन्द–श्रीशान्ति महंता शिवतिय कंता, सुगुण अनंता भगवंता ॥ भवभ्रमण हनंता सौख्य अनंता, दातारं तारनवंता॥१४॥ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः कवित्त–शांतिनाथ जिन के पदपंकज, जो भवि पूजैं मनवचकाय ॥ जन्मजन्म के पातक ताके, ततछिन तज के जांय पलाय ॥ मन वंछित सुख पावैं सो नर, वाचैं भाव भगति अति लाय ॥ तातैं वृन्दावन नित वंदे, जातैं शिवपुर राज कराय ॥ १५ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति श्रीशांतिनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ १६ ॥

१७ अथ श्रीकुंथुनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

(वृन्दावनकृत) छंद माधवी ।

स्थापना—अज अंक अजै पद राज निशंक,हरे भवशंक निशंकित दाता ।
मतमत्त मत्तगके माथे गथे, मतवाले तिनैं हनिज्यों हरि हाता ।
गजनागपुरी लियो जन्मजिन्हैं, रविके प्रभुनंदन श्रीमतिमाता ।
सहकुंथुसु कुंथुनिके प्रतिपालक,थापूं तिन्हें युत भक्ति विख्याता ॥

ॐ ह्रीं श्री कन्थुनाथ जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम् ।

अथ अष्टक (मनसुखरायजीकृत चाल मरहटी की)

जलं—सुरतरनीको उज्वल जलभर कनक भृङ्ग मेरी । मिथ्यातृषा निवारण कारण, करूं धार नेरी ॥
कुंथुसुन अरजदास केरी,कुंथुसुन अरजदास केरी । भवसिंधु पड़ा हूं नाथ निकालो,बांह पकरमेरी ।
प्रभुसुन अरजदास केरी,प्रभुसुन अरजदास केरी। जग जंजाल पड़ा हूं वेगनिकालो,बांहपकड़ मेरी ।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–लौंग लायची पिस्ता केला, कमरक शुचि लेरी। मोक्ष महाफल चाखन कारन जजूं सुकर केरी।
कुंथु सुन अरजदास केरी, कुंथु सुन अरजदास केरी, भवसिंधु पड़ा हूं नाथ निकालो, बांह पकड़ मेरी।
प्रभु सुन अरजदास केरी, प्रभु सुन अरजदास केरी। जग जंजाल पड़ा हूं वेग निकालो, बांह पकड़ मेरी
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी। फलजुत जजन करूं मनसुख भर हरो जगत फेरी।
कुंथु सुन अरजदास केरी, कुंथु सुन अरजदास केरी, भवसिंधु पड़ा हूं नाथ निकालो, बांह पकड़ मेरी। प्रभु सुन अरजदास केरी, प्रभु सुन अरजदास केरी। जग जंजाल पड़ा हूं वेग निकालो, बांह पकड़ मेरी। ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याणक। छंद मोतीदाम।

गर्भ–सुसावनकी दशमी कल जान। तजो सरवारथसिद्धि विमान। भयो गरभागम मंगल सार। जजें

हम श्रीपति अष्ट प्रकार ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय श्रावन कृष्ण दशमी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म—महा वैशाखसु एकम शुक्ल । भयो तव जन्मति ज्ञान समुक्त । कियो हरि मंगल मंदर सीस । जजें हम अत्र तुम्हें नुतसीस ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल प्रतिपदा जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप—तज्यो षटखंड विभव जिनचंद । विभव हित चित्त चितारि सुछंद । धरे तप एकम शुद्धि वैशाख । सुमग्न भये निज आनंद चाख ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल प्रतिपदा तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान—शुदी तियचैत सुचेतन शक्त । चहूं अरि क्षैकर तादिन व्यक्त । भई समवश्रुति भाख सुधर्म । जजूं पद ज्यूं पद पाईये पर्म ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल तृतीया ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण—शुदी वैशाख सुएकम नाम । लियो तिहदिवस अभय शिवधाम । जजें हरि हर्षित मंगल गाय । समर्चित हूं सु हिय वच काय ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल प्रतिपदा मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला। अडिल।

महाअर्घ–षट खंडनके शत्रु राजपद में हने। धरदीक्षा षट खंडन पाप तिन्हें हने। त्याग सुदर्शन चक्र धरमचक्री भये। करमचक्रचकचूर सिद्ध दृढ गढलये॥ १॥ ऐसे कुन्थु जिनेश तने पद पद्म को। गुण अनंत भंडार महासुख सद्म को। पूजूं अरघ चढाय पुरणानंद हो। चिदानंद अभिनंद इंद्रगणवंद हो

छंद पद्धडी–जय जय जय जय श्रीकुंथुदेव। तुमही ब्रह्मा हरि त्रिंबकेव। जय वुद्ध विदांबर विष्णु ईश। जय रमाकंत शिवलोक सीस॥३॥जय दयाधुरंधर सृष्टिपाल। जयजय जगबंधू सुगुण माल। सरवारथ सिद्धि विमान छार। उपजे गजपुरमें गुणअपार॥ ४॥ सुरराज कियो गिरन्हौन जाय। आनंद सहित युत भक्तिभाय। पुनि पिता सौंप कर मुदित अंग। हरि तांडव नृत्य कियो अभंग॥ ५॥ पुनि स्वर्गगयो तुम इतदयाल। वयपाय मनोहर प्रजापाल। षटखंड विभव भोगो समस्त। फिर त्याग योग धारो निरस्त॥ ६॥ चवघाति घात केवल उपाय। उपदेश दियो सब हित जनाय। जाके जानत भ्रम तम विलाय। सम्यक दर्शन निर्मल लहाय॥ ७॥ तुम धन्यदेव किरपा निधान। अज्ञान छियातम हरन भान। जय स्वच्छ गुणाकर सुक्त सुक्त। जय स्वच्छ सुखामृत भुक्त भुक्त॥ ८॥ जय भवभय भंजन कृत्य कृत्य। मैं तुमरो हूं निज भृत्य भृत्य। प्रभुअशरण शरण अधारधार। मम विघ्नमूल गिर जार जार॥९॥ जय कुनय यामिनी सूर सूर। जय मन वंछित सुख पूर पूर। मम करम बंध दृढ चूर

चूर। निजसम आनंद दे भूर भूर ॥१०॥अथवा जबलो शिव लहूं नाहि। तबलो येतो नितही लहां हि। भव भव श्रावककुल जन्म सार। भव भव सत मत सत संग धार ॥ ११ ॥ भव भव निज आतम तत्व ज्ञान। भव भव तप संयम शीलदान। भव भवअनुभवनिज चिदानंद। भव भव तुम आगम हे जिनंद ॥ १२ ॥ भव भव समाधि युत मरनसार। भवभव व्रत चाहूं अनागार। यह मोको हे करुणा निधान। सब जोग मिलो आगम प्रमाण॥१३॥ जबलो शिव सपति लहूं नांहि। तबलो मैं इनको नित लहाहि ॥ यह अरज हिये अवधारि नाथ। भव संकट हर कीजे सनाथ॥ १४ ॥

घत्ता छन्द। जय दीनदयाला वरगुणमाला, विरद विशाला सुख आला। मैं पूजूं ध्याऊं सीस निवाऊं, देहु अचल पदकी चाला॥ १५॥ ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः–छद त्रोटक–कुन्थु जिनेश्वर पाद पदम जो प्राणी ध्यावे।
अलिसम कर अनुराग सहज सो निजनिधि पावे।
जो वाचै शरदहै करै अनुमोदन पूजा।
वृन्दावन तिन पुरुष सदृश सुखिया नांह दूजा॥ १६ ॥
॥ इत्याशीर्वादः ॥ इति श्रीकुंथुनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥ १७ ॥

१८ अथ श्रीअरनाथजिन पूजा प्रारभ्यते।

(वृंदाबनकृत) छप्पै।

स्थापना—तप तुरंग असवार धार, तारन विवेकवर। ध्यान शुकल असिधार, शुद्ध सुविचार सुबक्तर॥
भावन सेना धरम दसो, सेनापति थापे। रतन तीन धर शक्ति, मंत्रि अनुभव निरमापे॥
सत्ता तल सोहं सुभट, धुनि त्याग केतु शत अग्रधर। येविधि समाज सजराजको, अरजिन जीते कर्मअर

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक। छंद त्रिभंगी।

जल—कन मणिमय झारी दृगसुख कारी, सुरसरितारी नीरभरी। मुनि मनसम उज्वल जनम जरादल, सो ले पदतल धारकरी। प्रभु दीनदयालं अरिकुल कालं, बिरद विशालं सुकमालं॥ हन मम जंजालं हे जग पालं, अर गुणमालं वर भालं॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन—भवताप नसावन विरद सुपावन, सुन मन भावन मोद भयो। तातैं घसबावन चंदन पावन,

चर्ण चढावन उमगायो ॥ प्रभु दीनदयालं अरि कुलकालं, बिरद विशालं सुकमालम् । हन मम जंजालं हे जग पालं, अर गुणमालं वर भालम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–तंडुल अनियारे श्वेत सवारे, शशि दुति टारे थाल भरे । पद अषै सुदाता जगविख्याता, लख भवताता पुंजधरे ॥ प्रभु दीनदयालं अरि कुलकालं, बिरद विशाल सुकमालम् । हन मम जंजालं हे जग पाल, अर गुण मालं वर भालम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–सुरतरुके शोभित सुरन मनोभित, सुमन अछोभित ले आयो । मनमथ के छेदन आप अवेदन, लख निरवेदन गुण गायो ॥ प्रभु दीनदयालं अरि कुलकालं बिरद विशालं सुकमालम् । हनमम जंजालं हे जग पालं, अर गुण मालं वर भालम् ॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–नेवज सुचि भक्षक प्रासुक अक्षक, पक्षक रक्षक स्वच्छधरी । तुम करम निकक्षक भस्मक लक्षक, दक्षक पक्षक रक्षकरी ॥ प्रभु दीनदयालं अरि कुलकाल, विरद विशालं सुकमालम् । हन मम जंजालं हे जग पाल, अर गुण मालं वर भालम् ॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण–चैत अमावस तिथ शुभ कर्म। नाश बासकिय शिवथल पर्म॥ निहचल गुण अनत भंडारी। जजूं देव सुध लेऊ हमारी ॥ ५ ॥ ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण अमावस्या मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–बाहर भीतरके जिते, जाहर अर दुखदाय। ताहर कर अरजिन भए, साहर शिवपुर राय॥
राय सुदर्शन पिता जसु, मित्रादेवी माय। हेम वरण तन वर्षवर, नव्वे सहस सु आय॥

छद त्रोटक–जय श्रीधर श्रीकर श्रीपतिजी। जय श्रीवर श्रीभर श्रीमति जी॥ भव भीम भवोदधि तारन है। अरनाथ नमो सुख कारण है॥ ३॥ गरभादिक मंगल सार धरे। जग जीवनके दुखदंद हरे॥ कुरुवंश शिखामणि तारन है। अरनाथनमो सुख कारण है ॥ ४॥ कर राज छखंड विभूति भई। तप धारत केवल बोध ठई॥ गण तीस जहां भ्रम वारण है अरनाथ नमो सुख कारण है॥ ५॥ भवि जीवन को उपदेश दियो। शिवहेत सबैजन धारलियो॥ जगके सब सकट टारन है। अरनाथ नमो सुख कारण है॥ ६ ॥ कहि वीस परूपण सार तहां। निजशर्म सुधारस धार जहां॥ गति चार ह्यषीपन धारन है। अर नाथ नमो सुख कारण है॥ ७ ॥ षट् काय ति जोग तिवेद तथा।

पनवीस कषाय सुज्ञान मथा ॥ सुर संयम भेद पसारन है। अरनाथ नमो सुख कारण है ॥ ८ ॥ रस दर्शन लेश्य छ भव्यजुगं। षट् सम्यक् सेनय भेद युगं ॥ जुगहार तथा सु अहारन है। अर नाथ नमो सुख कारण है ॥ ९ ॥ गुणथान चतुर्दश मारगणा। उप योग दुवादस भेद गणा। इम बीसव भेद उचारण है। अरनाथ नमो सुख कारण है ॥१०॥ इन आदि समस्त वखान कियो। भवि जीवन ने उर धार लियो ॥ कितने शिववादि वधारन है। अरनाथ नमो सुख कारण है ॥ ११ ॥ फिर आप अघाति विनाश सबै। शिव धाम विषे थितकीन तबै ॥ कृतकृत्य प्रभू जगतारन है। अरनाथ नमो सुख कारण है ॥ १२ ॥ अब दीनदयाल दया धरिये। मम कर्म कलंक सबै हरिये ॥ तुमरे गुण को कछु पार न है। अरनाथ नमो सुख कारण है ॥ १३ ॥

घत्ताछन्द–जय श्रीअरदेवं सुरकृत सेवं, समता भेवं दातारं। अरि कर्म विदारन शिवसुख कारन, जै जिनवर जगत्रातारं ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः–छंद आर्या–अर जिनके पदसारं,जो पूजैं द्रव्य भावसो प्राणी। सो पावैं भव पारं, अजरामर मोक्षथान सुखखाणी ॥ १५ ॥

इत्याशीर्वादः। इति श्रीअरनाथजिन पूजा संम्पूर्णा ॥ १८ ॥

१९ अथ श्रीमल्लिनाथ जिन पूजा लिख्यते।

(वृन्दावनकृत) छंद मदावलिप्त कपोल।

स्थापना—अपराजिततें आय नाथ, मिथिलापुर जाए। कुंभरायके नंद, प्रजापति मात बताए ॥
कनक वर्ण तन तुंग, धनुष पच्चीस विराजे ॥ सो प्रभुतिष्टो आय, निकट मम ज्यों भ्रमभाजे ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम्।

अथ अष्टक। छंद जोगीरासा।

जल—सुर सरिता जल उज्वल लेकर, मणि शृंगार भराई ॥ जनम जरा मृत नाशन कारण, जजू चरण जिन राई। राग दोष मद मोह हरन को, तुमही हो वरवीरा ॥ याते शरण गही जगपतिजी, वेगहरो भव पीरा ॥ ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन—बावन चंदन कदली नंदन, कुंकुम संग घसायो। लेकर पूजूं चरण कमल प्रभु, भव आताप

नसायो ॥ राग दोष मद मोह हरन को, तुम ही हो वरबीरा। याते शरण गही जगपति जी, वेग हरो भव पीरा ॥ ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–तंदुल शशिसम उज्वल लीनो, दीनो पुंज सुहाई। नाचत राचत भक्ति करतही, तुरत अक्षैपद पाई ॥ राग दोष मद मोह हरन को, तुम ही हो वरबीरा। याते शरण गही जगपति जी, वेग हरो भव पीरा ॥ ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प–पारिजात मंदार सुमन, संतान जनित महकाई। मार सुभटमद भंजन कारण, जजूं तुम्हें शिर नाई ॥ राग दोष मद मोह हरन को, तुम ही हो वरबीरा। याते शरण गही जगपति जी, वेग हरो भव पीरा ॥ ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–फेणी गोझा मोदन मोदक, आदिक सद्य उपाई। सो ले क्षुधा निवारण कारण, जजूं चर्ण लव लाई ॥ राग दोष मद मोह हरन को, तुम ही हो वरबीरा। याते शरण गही जगपति जी, वेग हरो भव पीरा ॥ ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दाप–तिमिर मोह उर मदिर मेरे, छाय रहो दुख दाई। तास नाश कारणको दीपक, अद्भुत जोत जगाई॥
राग दोष मद मोह हरन को, तुम ही हो वरबीरा। याते शरण गही जगपति जी, वेग हरो भव पीरा॥ ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–अगर तगर कृष्णागर चंदन, चूर सुगंध बनाई। अष्टकर्म जारन को तुमढिग, खेवत हूं जिनराई॥
राग दोष मद मोह हरन को, तुम ही हो वर बीरा। याते शरण गही जगपति जी, वेगहरो भव पीरा॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला केला लाई॥ मोक्ष महाफल दाय जानके, पूजूं मन हरषाई॥
राग, दोष मद मोह हरन को, तुम ही हो वरबीरा। याते शरण गही जगपतिजी, वेग हरो भव पीरा॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घं–जलफल अर्घमिलाय गायगुण, पूजूं भक्ति बढाई। शिवफल राजहेतु हेश्रीधर, शर्णगही मैं आई॥
राग दोष मद मोह हरन को, तुम ही हो वर बीरा। याते शरण गही जगपति जी, वेग हरो भव पीरा।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान , निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। छन्द लक्ष्मीधरा।

गर्भ–चैत की शुद्ध एकम भली राजई। गर्भ कल्याण कल्याणको साजई॥ कुंभराजा प्रजापति माता तने देवदेवी जजें सीसनावें घने ॥ १ ॥ ऊों ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा गर्भ कल्याण काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म–मार्गशीर्ष शुदी ग्यारसी राजई । जन्म कल्याणको दिवस सो छाजई ॥ इंद्रनागेंद्र पूजें गिरिंद्रे जिन्हें । में जजूं ध्यायके सीस नाऊं तिन्हें ॥ २ ॥ ऊों ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल एकादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–मार्गशीर्षे शुदी ग्यारसी के दिना। राजको त्याग दीक्षा धरोहे जिना ॥ दान गोक्षीरको नंदषेणें दियो। मैं जजूं जासके पंच चर्जे भयो॥३॥ ऊों ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल एकादशी तप कल्याण काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान–पौषकी श्याम दूतीहने घातिया। केवलज्ञान साम्राज्य लक्ष्मी लिया॥ धर्म चक्रीभये सेव शक्रीकरें। मैं जजूं चर्ण ज्यों कर्म वक्री टरें ॥ ४ ॥ ऊों ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय पौष कृष्ण द्वितीया ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

घत्ताछन्द–जय जिनस्वामी त्रिभुवन नामी, मल्ल विमल कल्याण करा॥ भवदंद विदारन आनंद कारण, भवि कुमोद निशईशवरा ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ आशीर्वादः। छंद शिखरिणी–जजें हैं जो प्राणी द्रव्य अर भावादि विधिसों।करें नाना भांति भगति थुतिवा नौति सुधिसों ॥ लहे शक्री चक्री सकल सुख सौभाग्य तिनको॥ तथा मोक्षे जावे जजत जन जो मल्लि जिन को ॥ २२ ॥

इति श्रीमल्लिनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ १९ ॥

२० अथ श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते।

(वृन्दावनकृत) छंद मत्तगयंद ।

स्थापना–प्राणतस्वर्ग विहायलियो, जिनजन्मसु राजगृही मह आई ।
श्रीसुहमित्त पिता जिनके, गुणवानमहा पदमा जसु माई ॥
वीस धनुष तन श्याम छवी, कछ अंक हरीवर वंश बताई ।
सो मुनिसुव्रतनाथ प्रभूकह, थापत हूं इत प्रीति लगाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ:ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक। छंद गीता।

जल–उज्वल सुजल जिम यश तुमारो, कनक झारी में भरूं । जरामरण जामन हरण कारण, धार तुम पदतर करूं ॥ शिवसाथ करत सनाथ, सुव्रतनाथ मुनिगुणमाल हैं । तसु चरण आनंद भरण तारण, तरण विरद विशाल हैं ॥ अब श्रीमुनिसुव्रत में पायन परूं, सुखदाय लख पायस परूं ।

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन–भवताप घायक शांति दायक, मलयहरि घस ढिगधरूं। गुण गाय सीस नवाय पूजत, विघ्न
ताप सबै हरूं॥ शिवसाथ करत सनाथ, सुव्रतनाथ मुनि गुण माल हैं। तसु चरण आनंद
भरण तारण, तरण बिरद विशाल हैं॥ अब श्रीमुनिसुव्रत मैं पायन परूं, सुखदाय लख पायन परूं॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय
संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–तंडुल अखंडित दमक शशिसम, गमक युत थारी भरूं। पद अषय दायक मुकति नायक, जान
पद पूजा करूं॥ शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ मुनिगुण माल हैं। तसु चरण आनद भरण
तारण, तरण बिरद विशाल हैं। अब श्रीमुनिसुव्रत मैं पायन परूं। सुखदाय लख पायन परूं।
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीत स्वाहा।

पुष्प–वेला चमेली रायवेली, केतकी करना सरूं। जगजीत मन्मथ हरण लख, प्रभु तुम निकट ढेरी
करूं॥ शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ मुनिगुण माल हैं। तसु चरण आनंद भरण तारण,
तरण बिरद विशाल हैं॥ अब श्रीमुनिसुव्रत मैं पायन परू, सुखदाय लख पायन परूं।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–पकवान विविध मनोग्य पावन, सरस मृदुगुण विस्तरूं। सो लेय तुम पद तर धरतही, क्षुधा डायनको हरूं॥ शिव साथ करत सनाथ, सुव्रतनाथ मुनि गुण माल हैं। तसु चरण आनद भरण तारण, तरण विरद विशाल हैं॥ अब श्रीमुनिसुव्रत मैं पायन परूं, सुखदाय लख पायनपरूं॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–दीपक अमोलक रतन मणिमय, तथा पावन घृत भरूं॥ सो तिमिर मोह विनाश, आतम भास कारण ज्वैधरूं॥ शिव साथ करत सनाथ, सुव्रतनाथ मुनि गुण माल हैं। तसु चरण आनंद भरण तारण, तरण बिरद विशाल हैं॥ अब श्रीमुनिसुव्रत मैं पायन परूं, सुखदाय लख पायन परूं॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–कर्पूर चंदन चूर भूर, सुगंध पावक में धरूं। तसु जरत जरत समस्त पातक, सार निज सुख को भरूं॥ शिवसाथ करत सनाथ, सुव्रतनाथ मुनि गुण माल हैं। तसु चरण आनंद भरण तारण, तरण बिरद विशाल हैं॥ अब श्रीमुनिसुव्रत मैं पायन परूं, सुखदाय लख पायन परूं।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल-श्रीफल अनार सुआंबआदिक, पक्वफलअति विस्तरूं। सो मोक्ष फलके हेतु लेकर, तुम चरण आगे धरूं॥ शिवसाथ करत सनाथ,सुव्रतनाथ मुनि गुण माल हैं। तसु चरणआनंद भरण तारण, तरण विरद विशाल हैं॥ अब श्रीमुनिसुव्रत मैं पायन परू, सुखदाय लख पायन परू।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-जल गंधआदि मिलाय आठों, दर्व अर्घ सजो वरू। पूजूं चरण पंकज भगति युत, जातें जगत सागर तरू॥ शिव साथ करत सनाथ, सुव्रतनाथ मुनि गुणमाल हैं। तसु चरण आनंद भरण तारण, तरण विरद विशाल हैं॥ अब श्रीमुनिसुव्रत मैं पायन परू, सुखदाय लख पायन परू॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय
अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथपंचकल्याणक। छंद चोटक।

गर्भ-तिथि दोयज सावन श्याम भयो। गरभागम मंगल मोद भयो॥ हरि वृन्द शची पितु मात जजैं।

हम पूजत ध्यावत पाद कजैं ॥ उों ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय श्रावण कृष्ण द्वितीया गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–वैशाख वदी दशमी वरनी। जन्मे तिहि दिवस त्रिलोक धनी॥ सुर मन्दर ध्याय पुरंदरने। मुनि सुव्रतनाथ हमें शरने ॥ २ ॥ उों ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण दशमी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–तप दुर्द्धर श्रीधरने गहियो। वैशाख वदी दशमी कहियो॥ निरुपाधि समाधि सुध्यावत हैं। हम पूजत भक्ति बढावत हैं ॥ ३ ॥ उों ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण दशमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–वरकेवल ज्ञान उद्योत कियो। नवमी वैशाख वदीसुखियो॥घन मोह निशाभनि मोक्षमगा। हम पूजतहैं भवसिंधु थगा ॥ ४ ॥ उों ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण नवमी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–वदी वारस फागुण मोक्षगये। तिहुंलोक शिरोमणि सिद्धभये॥ सु अनंत गुणाकर विघ्नहरी। हम पूजत हैं मनमोद भरी ॥५॥ उों ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्ण द्वादशी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथजयमाला। दोहा।

महाअर्घं–मुनिगण नायक मुक्त पति, सुक्त व्रताकर युक्त। भुक्ति मुक्ति दातार लख, वंदूं तन मनउक्त॥

छंद त्रोटक–जय केवल भान अमान धरं। मुनिस्वच्छ सरोज विकाश करं॥भव संकट भंजन लायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं॥ २ ॥ घनघात वनं दव दीप्तभनं। भवबोध तृषातुर मेघघनं॥ नित मंगल वृंद बधायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं॥ ३ ॥ गरभादिक मंगल सारधरे। जग जीवन के दुखदंद हरे॥ सब तत्त्व प्रकाशन लायक हैं। मुनि सुव्रत सुव्रत दायक हैं॥ ४॥ शिव मारग मंडण तत्त्व कहो। गुणसार जगत्रय शर्म लहो॥ रुज रागरुदोष मिटायक हैं। मुनि सुव्रत सुव्रत दायक हैं ॥ ५ ॥ समवश्रुतिमें सुरनार सही। गुण गावत नावत भाल मही॥ अरु नाचत भक्ति बढ़ायक हैं। मुनि सुव्रत सुव्रत दायक हैं ॥ ६ ॥ पग नूपुरकी धुनि होत भनं। झननं झननं झननं झननं॥ सुरलेत अनेक रमायकहैं। मुनिसुव्रत सुव्रत दायकहैं ॥ ७ ॥ घननं घननं घन घंट वजे। तननं तननं तन तान सजे॥ द्रम द्रम मृदंग वजायक हैं। मुनि सुव्रत सुव्रत दायक हैं॥ ८॥ छिनमें लघु औ छिनथूल बने। युत हावविभाव विलास पने॥ मुखतें पुन यों गुणगायक हैं। मुनि सुव्रत सुव्रत दायक हैं ॥९॥ धृगतां धृगतां पग पावत हैं। सननं सननं सु नचावत हैं॥ अति आनंद को पुन पाय कहैं। मुनि सुव्रत सुव्रत दायक हैं॥ १० ॥ अपने भवको फल लेत सही। शुभ भावनतें सब पाप दही॥ तिततें सुखको

सब पायक हैं। मुनि सुव्रत सुव्रत दायक हैं ॥ ११ ॥ इन आदि समाज अनेक तहां। कहि कौनसके जु विभेद यहां॥ धन श्रीजिनचंद सुधायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रत दायक हैं ॥ १२ ॥ पुन देश विहार कियो जिनने। वृष अमृत वृष्टि कियो तुमने॥ हमको तुमरी शरनाइक है। मुनि सुव्रत सुव्रत दायक हैं ॥ १३ ॥ हमपै करुणा कर देव अबै। शिवराज समाज सु देहु सबै ॥ जिम होऊ सुखाश्रम नायक हैं। मुनि सुव्रत सुव्रत दायक हैं ॥ १४ ॥ भवि वृन्दतनी विनती जु यही। मोहि देऊ अभैपद राजसही ॥ हम आन गही शरनाइक है। मुनि सुव्रत सुव्रत दायक है॥ १५ ॥

घत्ताछन्द–जय गुणगण धारी शिव हितकारी,शुद्ध बुद्ध चिद्रूप पती॥ परमानंद दायक दास सहायक, मुनि सुव्रत जयवंत यती ॥ १६ ॥ ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ आशीर्वादः। दोहा–मुनिसुव्रत के चरणयुग, जो पूजे अभिनंद।

सो सुर नर सुख भोग के, पावे सहजानंद ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वादः। इति श्रीमनिसुब्रतनाथजिन पूजा संपूर्णा ॥ २० ॥

२१ अथ श्री नमिनाथजिन पूजा प्रारभ्यते ।

(वृन्दावन कृत) छंद मदावलिप्त कपोल, वा रोडक ।

स्थापना– श्रीनमिनाथ जिनंदनमो विजयारध नंदन । विख्यादेवी मात सहज सब पाप निकंदन ॥
अपराजित तज जै मिथुलापुर वर आनंदन ॥ तिन्हें सुथापूं यहां त्रिधा करके पद वंदन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक । छंद सुन्दरी वा द्रुतविलंबित ।

जल–सुरनदी जल उज्वल पावनं । कनक भृंग भरो मन भावनं । जजतहूं नमि के गुण गाय के ।
युग पदांबुज प्रीति लगाय के ॥ ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंच कल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चन्दन–हरि मलयमिल केशरसे घसो । जगतनाथ भवातपको नसो । जजतहूं नमि के गुणगाय के ।
युग पदाम्बुज प्रीति लगाय के ॥ ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा तापरोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत–गुलक के सम सुन्दर तंदुलं। धरत पुंज सुभुंजत संकुलं। जजत हूं नमि के गुणगाय के।
युग पदाम्वुज प्रीति लगाय के ॥ ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण
पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–कमल केतकि वेल सुहावनी। समरशूल समस्त नसावनी ॥ जजत हूं नमि के गुण गायके।
युग पदाम्वुज प्रीति लगाय के ॥ ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण
पंच कल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य–शशिसुधासम मोदक मोदनं। प्रबल दुष्ट क्षुधामद खोदनं ॥ जजत हूं नमि के गुण गायके।
युगपदाम्वुज प्रीति लगाय के ॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण
पंच कल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप–शुचि घृताश्रित दीपक जोइया। असम मोह महातम खोइया ॥ जजत हूं नमि के गुणगाय के।
युगपदाम्बुज प्रीति लगाय के ॥ ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण
पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–अमर जिह्व विषे दश गंधको। दहत दाहत कर्म कबंधको ॥ जजत हूं नमि के गुण गायके ॥
युगपदाम्बुज प्रीति लगाय के ॥ ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण
पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–फल सुपक्व मनोहर पावने। सकल विघ्न समूर नसावने॥ जजत हूं नमि के गुण गायके।
सुगपदाम्बुज प्रीति लगाय के॥ ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल फलादि मिलाय सनोहरं। अरघ धारतही भय भवहरं। जजत हूं नमि के गुण गाय के।
युग पदाम्वुज प्रीति लगाय के॥ ॐ ह्रीं श्री ममिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ पंच कल्याणक। छंद पाद्धता।

गर्भ–गरभागम मंगल धारा। युग आश्विन श्याम उदारा॥हरि हर्ष जजे पितु माता। हम पूजें त्रिवभुन त्राता॥१॥ॐ ह्रींश्रीनमिनाथ जिनेन्द्रायआश्विनकृष्णद्वितीया गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जन्म–जन्मोत्सव श्याम अषाढा। दशमी दिन आनंद बाढा॥ हरि मंदिर पूजें जाई। हम पूजें मन वच काई॥२॥ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढकृष्ण दशमी जन्मकल्याणकायअर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तप–तप दुर्धर श्रीधर धारा। दशमी कलिषाढ उदारा॥निज आतम रसझरलायो। हम पूजतआनंद पायो॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ कृष्ण दशमी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

ज्ञान–शित मगसिर ग्यारस चूरे। चव घात भये गुणपूरे॥ समवश्रुति केवल धारी।

तुम को नित नमो हमारी ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मार्गशिर शुक्ल एकादशी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण–वैशाख चतुर्दशि श्यामा । हनि शेष वरी शिववामा ॥ सम्मेद थकी भगवंता । हम पूजें सुगुण अनंता ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला ॥ दोहा ॥

महाअर्घ–आयु सहस दश वर्षकी, हेम वरण तन सार ॥ धनुष पंचदश तुंगतन, महिमा अपरंपार ॥१॥

चौपाई–जयजयजय नमिनाथ कृपाला । अरिकुल गहन दहन दवज्वाला ॥ जयजय जग धरम पयोधर धीरा । जय भव भंजन गुण गंभीरा ॥२॥ जयजय परमानंद गुणधारी । विश्व विलोकन जन हितकारी ॥ अशरण शरण उदार जिनेशा । जयजय समवसरण आवेशा ॥ ३ ॥ जयजय केवलज्ञान प्रकाशी । जय चतुरानन हनि भव पाशी ॥ जय त्रिभुवन हित उद्यमवंता । जयजयजयजय नमि भगवंता ॥४॥ जय जय तुम सप्ततत्व दरशायो । तासु सुनत भवि निजरस पायो ॥ एक शुद्ध अनुभव निज भाखें । दो विध राग दोष क्षय आखे ॥ ५ ॥ द्वय श्रेणी द्वय नय द्वय धर्मं । दो प्रमाण आगम गुण शर्मं ॥ तीन लोक त्रययोग त्रिकालं । सल्ल पल्ल त्रयवात वयालं ॥ ६ ॥ चार बंध संज्ञा गति ध्यानं । आराधन निक्षेप चौ दानं ॥ पंच लब्धि आचार प्रमादं । बंध हेतु पैताले सादं ॥७॥ गोलक पंच भाव

शिव भौने। छहो दरव सम्यक अनुकौने ॥ हानि वृद्धि तप समय समेता। सप्तभंग वाणी के नेता ॥ ८॥ सयम समुद्घात भय सारा। आठ करम मद दल गुणधारा ॥ नवों लब्धि नव तत्व प्रकाशे। नौ कषाय हरि तूप हुलासे ॥ ९ ॥ दसों बंधके मूल नसाये। सो इन आदि सकल दरसाये ॥ फेर विहर जगजन उद्धारे। जयजय ज्ञान दरस अविकारे ॥ १० ॥ जय वीरज जय सूक्षम वंता। जय अवगाहन गुणवरनंता ॥ जयजय अगुरु लघू निरबाधा। इन गुणयुत तुम शिवसुखसाधा ॥ ११ ॥ ताको कहत थके गणधारी। तो को समरथ कहें प्रचारी ॥ ताते मैं अब शरणे आयो। भवदुःख मेट देहु शिवरायो ॥ १२ ॥ बारबार यह अरज हमारी। हे त्रिपुरारी हे शिवकारी ॥ पर परनतिको वेग मिटावो। सहजानंद सरूप भिटावो ॥ १३ ॥ वृन्दावन याचत शिरनाई। तुम मम उर निवसो जिनराई ॥ जबलौं शिवनहि पाऊं सारा। तब लौं यही मनोरथ ह्मारा ॥ १४ ॥

घत्ताछन्द—जयजय नमिनाथं हो शिवसाथं, औ अनाथके नाथ सदं ॥ ताते शिरनायो भगति बढायो, चिहन चिन्ह शतपत्र पद ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वादः—श्रीनमिनाथ तने युगल, चरण जजे जो जीव ॥
सो सुरनर सुख भोगवर, होवे शिवतिय पीव ॥ १६ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

इति श्री नमिनाथ जिन पूजा सम्पूर्णा ॥२१॥

२२अथ श्री नेमिनाथजिन पूजा प्रारम्यते।

(वृन्दाबनकृत) छंद लक्ष्मीधरा वा अर्धलक्ष्मीधरा।

स्थापना—जैतिजै जैतिजै जैतिजै नेमिकी, धर्म अवतार दातार सो चैनकी॥
श्रीशिवानंद भवफंद नि.कंद, ध्यावें जिन्हें इद्र नागेंद्र औ मैनकी॥
परम कल्याण के देनहारे तुम्ही, देव हो सेव ताते करूं एनकी॥
थापहूं वारत्रय शुद्ध उच्चार त्रय, शुद्धता धार भवपारको लेनकी॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर सवौषट् आव्हाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठ. स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र अत्रमम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक। चाल होली तालयुत।

जल—निगम नदी जल प्रासुक लीनो, कंचन भृंग भराय। मन वच तन ते धार देतही, सकल कलंक नसाय॥ दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्षके॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्रायगर्भ, जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्ममृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा।

चन्दन—हरिचंदन युत कदलीनंदन, कुंकुम संग घसाय॥ विघ्नताप नाशन के कारण, जजूं तिहारे

पाय ॥ दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा तापरोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीतिस्वाहा।

अक्षत–पुण्यराशि तुम यश सम उज्वल, तंदुल शुद्ध मंगाय ॥ अखै सौख्य भोगनके कारण, पुंजधरूं गुणगाय ॥ दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्षके ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्प–पुंडरीक तृण द्रुमको आदिक, सुमन सुगंध मिलाय ॥ दर्पक मनमथ भंजन कारण, जजूं चरण लवलाय ॥ दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भं, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य–घेवरबावर खाजे साजे, ताजे तुरत मंगाय ॥ क्षुधावेदनी नाश करन को, जजूं चरण उमगाय ॥ दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप–कनकदीप नवनीत पूरकर, उज्वल जोत जगाय ॥ तिमिर मोह नाशक तुमको लख, जजूं चर्ण हुलसाय ॥ दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–दशविध गंध मंगाय मनोहर, गुंजत अलिगण आय ॥ दसों बंध जारन के कारण, खेऊं तुम ढिग

लाय ॥ दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के ॥ ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म,तप,ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–सुरस वरण रसना मनभावन, पावन फल सु मंगाय ॥ मोक्ष महाफल कारण पूजूं, हे जिनवरतुम पाय ॥ दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्षके ॥ ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ–जल फल आदि साज शुचि लीनों, आठों दर्व मिलाय ॥ अष्टम थितिके राज करन को, जजूं अंग वसुनाय ॥ दाता मोक्षके, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के ॥ ॐ ह्री श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक । छन्द पाद्धता

गर्भ–सित कातिक छट्ट अमंदा । गरभागम आनदकंदा ॥ शचिसेय शिवापद आयी । हम पूजें मनवचकायी ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कार्तिक शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जन्म–सित सावन छट्टअमंदा । जनमे त्रिभुवनके चंदा ॥ पितु समुद महासुख पायो । हमपूजत विघ्न नसायो ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल षष्ठी जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तप–तज राजमती व्रतलीनो । सित सावन छट्टप्रवीनो ॥ शिवनार तबै हरषाई । हम पूजैं पद शिर नाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल षष्ठी तप कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ॥

२३ अथ श्रीपार्श्वनाथ जिन पूजा लिख्यते।

(वृन्दावनकृत) कवित्त।

स्थापना–प्राणत देव लोकते आये, वामादे उर जगदाधार।
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि, अंक हरित तन सुख दातार॥
जरत नागयुग बोधदियो जिहि, भुवनेश्वर पद परम उदार।
ऐसे पारसको तज आलस, थाप सुधारस हेत विचार॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक। छंद प्रमिताक्षरा।

जल–सुर दीर्घिका कन कुंभ भरूं। तव पाद पद्मतर धार करूं॥ सुखदाय पाय यह सेवत हूं। प्रभुपार्श्व सार्श्व गुण वेवत हूं॥ ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन-हरिगंध कुंकुम कपूर घसूं। हर चिन्ह हेर अरचूं सुरसूं॥ सुखदाय पाय यह सेवत हूं। प्रभु पार्श्व सार्श्व गुण वेवत हूं॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसारा ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत-हिमहीर निरज समान शुचं। वर पुंज तंडुल तवाग्रमुचं॥ सुखदाय पाय यह सेवतहूं। प्रभुपार्श्व सार्श्व गुण वेवतहूं॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प-कमलादि पुष्प धनुपुष्प धरूं। मद भंजन हेत ढिग पुंज करूं॥ सुखदाय पाय यह सेवतहूं। प्रभु पार्श्व सार्श्व गुण वेवत हू॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम वाण विनाशनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य-चरु नव्यगव्य रससार करूं। धर पाद पद्मतर मोद भरूं॥ सुखदाय पाय यह सेवत हूं। प्रभु पार्श्व सार्श्व गुण वेवत हूं॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

दीप-मणि दीप जोति जगमग्ग मई। तव पाद कंजतर वारदई॥ सुखदाय पाय यह सेवत हूं। प्रभु पार्श्व सार्श्व गुण वेवत हूं॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप–दश गंध खेय मन माचत हैं। वह धूम धूम मिस नाचत हैं॥ सुखदाय पाय यह सेवत हूं। प्रभु पार्श्व सार्श्व गुण वेवतहूं॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल–फल प्रासुक तुमढिग लाय धरूं। ताते शिव सुन्दर नार वरूं॥ सुखदाय पाय यह सेवत हूं। प्रभु पार्श्व सार्श्व गुण वेवत हूं॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ–जल आदिसाज सबद्रव्य लिया। कनथार धार नुतनृत्य किया॥ सुखदाय पाय यह सेवतहूं। प्रभु पार्श्व सार्श्व गुण वेवतहूं॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। छंद लक्ष्मी धरा।

गर्भ–पक्ष वैशाखकी श्याम दूजी भनो। गर्भ कल्याणको दिवस सोहीगनो॥ देव देवेंद्र श्रीमातु सेवें सदा। मैं जजूं नित्यजो विघ्न होवें विदा॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण द्वितीया गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–पौषकी श्याम एकादशीको स्वजी। जन्मलीनो जगन्नाथ धर्म ध्वजी॥ जायके नाक नागेंद्रने पूजिया। मैं जजूं ध्यायके भक्ति धारूं हिया॥ २॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौष कृष्ण

एकादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तप–कृष्ण एकादशी पौष की पावनी। राजको त्याग वैराग धारोवनी॥ ध्यान चिद्रूपको ध्याय सातामई। आपको मैं जजूं भक्ति भावे लई॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण एकादशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–चैतकी चौथ श्यामा महा भावनी। तादिना घातिया घात शोभावनी॥ वाह्य अभ्यंतरे छद लक्ष्मी धरा। जैति सर्वज्ञ मैं पाद सेवा करा॥ ४॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण चतुर्थी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण–सप्तमी शुद्ध शोभै महा सावनी। तादिना मोक्ष पायो महा पावनी॥ शैल समद्रते सिद्धराजा भये। आपको पूजते सिद्ध काजा ठये॥ ५॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल सप्तमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। दोहा।

महाअर्घ–पार्श्व परम गुण रास है, पार्श्व करम हरतार॥ पास शर्म निजवास दो, पार्श धर्मधरतार॥
नगर वनारस जन्मलिय, वंश इक्ष्वाकु महान॥ आयु वरष शत तुंगनव, हस्तसु नव परमाण॥

२४ अथ श्रीवर्धमान जिन पूजा लिख्यतें।

(वृन्दावनकृत) छंद मत्तगयन्द ।

स्थापना–श्रीमतवीर हरो भव पीर भरो सुखसीर अनाकुल ताई ।
केहरि अंक अरी करदंक नये हरि पंकत मोल सुहाई ॥
मैं तुम को इत थापत हूं प्रभु भक्ति समेत हिये हरषाई ।
हे करुणाधन धारक देव यहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक । (चाल द्यानतरायजी कृत नंदीश्वराष्टक की)

जल–क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कंचन भृंग भरू । प्रभु वेगहरो भव पीर, यातैं धार करूं ॥
श्रीवीर महा अति वीर, सन्मति नायक हो । जय वर्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो ॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म

मृत्यु जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन–मलयागिर चदन सार, केशर संग घसो । प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसो ॥
श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो । जय वर्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो ॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय संसार ताप रोग विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–तदुल सित शशिसम शुद्ध, लीनो थार भरी । तसु पुंज धरूं अविरुद्ध, पाऊं शिव नगरी ॥
श्रीवीर महा अति वीर, सन्मति नायक हो । जय वर्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो ॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–सुर तरुके सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे । सो मन्मथ भंजन हेत, पूजूं पद थारे ॥
श्रीवीर महा अति वीर, सन्मति नायक हो । जय वर्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो ॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–रस रज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थाल भरी । पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूखअरी ॥
श्रीवीर महा अति वीर, सन्मति नायक हो । जय वर्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप–तमखण्डित मंडित नेह, दीपक जोवतहूं । तुम पदतर है सुखगेह, भ्रमतम खोवत हूं ॥
श्रीवीर महा अति वीर, सन्मति नायक हो । जय वर्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप–हरि चंदन अगर कपूर, चूर सुगंध करा । तुम पद तर खेवत भूर, आठों कर्म जरा ॥
श्रीवीर महा अति वीर, सन्मति नायक हो । जय वर्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल–ऋतु फल कलवर्जित लाय, कचन थाल भरा । शिव फल हित हे जिनराय, तुमढिग भेट धरा ॥
श्रीवीर महा अति वीर, सन्मति नायक हो । जय वर्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ–जलफल वसु सज हिमथार, तन मन मोद धरूं । गुण गावूं भवदधि तार, पूजत पाप हरूं ॥

श्रीवीर महा अति वीर,सन्मति नायकहो। जय वर्धमान गुणधीर,सन्मति दायक हो॥ॐह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाणपंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। राग टप्पा।

गर्भ–मोहि राखोहो शरना। श्रीवर्धमान जिनराजजी ॥ मो० ॥ गरभ अषाढसित छट्ट लियो थित, त्रिशला उर अघ हरना ॥ सुरपति तितसेव करो नित, मैं पूजूं भव हरना।
मोहि राखो हो शरणा, श्रीवर्धमान जिनराजजी ॥ मो० ॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमानजिनेन्द्राय आषाढ शुक्ल षष्ठी गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म–जनम चैतसित तेरस के दिन, कुंडल पुर कन वरना। सुर गिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजूं भव तरना ॥ मोहि राखो हो शरणा, श्रीवर्धमान जिनराजजी ॥ मो० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल त्रयोदशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप–मगसिर असित मनोहर दशमी, तादिन तप आचरना। नृप कुमार घर पारण कीनो, मैं पूजूं तुम चरणा ॥ मोहि राखो हो शरणा, श्रीवर्धमानजिनराज जी ॥ मो० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय मार्गशिर कृष्ण दशमी तप कल्याणकाय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान–शुकल दशैं वैशाख दिवस अरि, घाति चतुक छै वरना। केवल लहि भवि भवसर तारे, जजूं चर्ण सुख भरना ॥ मोहि राखो हो शरणा, श्रीवर्धमान जिनराज जी ॥ मो० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल दशमी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण—कातिक श्याम अमावसके दिन, पावा पुरते परना ॥ गणफण वृन्द जजे तित बहुविध, मैं पूजूं भय हरना ॥ मोहि राखो हो शरणा, श्रीवर्धमान जिनराज जी ॥ मों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय कार्तिक कृष्णामावस्या मोक्ष कल्याणकाय, अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। छंद गीता।

महाअर्घ—गणधर अशनिधर चक्रधर, हलधर गदाधर वरवदा। अर चापधर विद्यासुधर, त्रीशूलधर सेवे सदा ॥ दुखहरण आनंदभरण, तारणतरण चरणरसाल है। सुकुमाल गुणमणिमाल, उन्नत भालकी जयमाल है ॥

घत्ताछन्द—जय त्रिशला नंदन हरिकृत वंदन, जगदानंदन चंदवरं ॥
भवताप निकंदन तन मन वंदन, रहित सपन्दन नयन धरं ॥ २ ॥

छंद त्रोटक—जय केवल भानुकला सदनं। भवि कोक विकाशनकं वदनं ॥ जगजीतमहारिपु मोह हरं। रजज्ञान दृगंबर चूरकरं ॥ ३ ॥ गरभादिक मंगल मंडित हो। दुख दारिदको नित खंडित हो ॥ जगमांहि तुम्ही सत पंडित हो। तुमही भवभाव विहंडित हो ॥ ४ ॥ हरिवंश सरोजनिको रवि हो। बलवंत महंत तुम्ही कवि हो ॥ लह केवल धर्म प्रकाश कियो। अबलो सोइ मारग राजत यो ॥ ५ ॥ पुन आप तने गुणमांहि सही। सुर मग्न रहे जितने सबही ॥ तिनकी वनिता गुण गावत हैं। लय माननि सो मन भावत हैं ॥ ६ ॥ पुन नाचत रंग अनेक भरी। तुम भक्ति विषे पग येम धरी ॥ झननं

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय वैशाख शुक्ल दशमी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
निर्वाण–कातिक श्याम अमावसके दिन, पावा पुरते परना ॥ गणफण वृन्द जजे तित बहुविध, मैं पूजूं भय हरना ॥ मोहि राखो हो शरणा, श्रीवर्धमान जिनराज जी ॥ मो० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय कार्तिक कृष्णामावस्या मोक्ष कल्णाणकाय,अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। छंद गीता।

महाअर्घ–गणधर अशनिधर चक्रधर,हलधर गदाधर वरवदा। अर चापधर विद्यासुधर,त्रीशूल धर सेवे सदा॥
दुखहरण आनंदभरण,तारणतरण चरणरसाल है। सुकुमाल गुणमणिमाल,उन्नत भालकी जयमाल है॥

घत्ताछन्द–जय त्रिशला नंदन हरिकृत वंदन, जगदानंदन चंदवरं ॥
भवताप निकंदन तन मन वंदन, रहित सपन्दन नयन धरं ॥ २ ॥

छंद त्रोटक–जय केवल भानुकला सदनं। भवि कोक विकाशनकं वदनं॥ जगजीतमहारिपु मोह हरं। रजज्ञान दृगंवर चूरकरं ॥ ३ ॥ गरभादिक मंगल मंडित हो। दुख दारिदको नित खंडित हो ॥ जगमांहि तुम्ही सत पंडित हो। तुमही भवभाव विहंडित हो ॥ ४ ॥ हरिवंश सरोजनिको रवि हो। वलवत महंत तुम्ही कवि हो ॥ लह केवल धर्म प्रकाश कियो। अबलो सोइ मारग राजत यो ॥५॥ पुन आप तने गुणमांहि सही। सुर मग्न रहे जितने सबही ॥ तिनकी वनिता गुण गावत हैं। लय माननि सो मन भावत हैं ॥ ६ ॥ पुन नाचत रंग अनेक भरी। तुम भक्ति विषे पग येम भरी ॥ झननं

झननं झननं झननं। सुरलेत तहां तननं तननं ॥ ७॥ घननं घननं घनघंट बजे। ढमदं ढमद मिरदंग सजे ॥ गणनांगण गर्भगता सुगता। ततता ततता अतता वितता ॥ ८॥ धृगतां धृगतां गत बाजत हैं। सुरताल रसालजु छाजत हैं॥ सननं सननं सननं नभमे। इक रूप अनेकजु धार भमें ॥ ९॥ केइ नार सु बीन बजावत हैं। तुमरो यश उज्वल गावत हैं॥ करताल विषे करताल धरें। सुरताल विशालजु नादकरें ॥ १०॥ इन आदि अनेक उछाह भरी। सुर भक्तिकरे प्रभुजी तुमरी॥ तुमही जग जीवन के पितु हो। तुमही बिन कारणते हितु हो ॥ ११ ॥ तुमही यह विघ्न विनाशन हो। तुमही निज आनंद भासनहो ॥ तुमही चित चिंतत दायक हो। जगमांहि तुम्ही शिव लायक हो ॥ १२॥ तुमरे पन मगल मांहि सही। जिय उत्तम पुण्यलयो सब ही ॥ हमको तुमरी शरणागत है। तुमरे गुण में मन पागत है॥ १३ ॥ प्रभु मो हिय आप सदा वसिये। जबलों वसुकर्म नही नसिये॥ जबलों तुम ध्यान हिये वरतो। तबलों श्रुति चिंतन चित्त रतो॥१४॥तबलों व्रत चारित चाहत हूं। जबलों शुभभाव सुगाहत हूं॥ तबलों सत सगति नित्त रहूं। जबलों मम संयम चित्त गहूं ॥१५॥ जबलों नहिनाश करूं अरको। शिवनार वरूं समता धर को। यह दो तबलों हमको जिनजी। हम याचत हैं इतनी सुन जी।१६।

घत्ताछन्द—श्रीवीर जिनेशा नमित सुरेशा, नागनरेशा भगति भरा ॥ वृन्दावन ध्यावे विघन नसावे, वांछित पावे शर्मवरा ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवर्धमान जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा !

अथ आशीर्वादः । दोहा–श्रीसन्मतिके युगल पद, जो पूजे धर प्रीति। वृन्दावन सो चतुर नर, लहै मुकति

नव नीति ॥ १८ ॥ इत्याशीर्वादः । इति श्रीवर्धमानजिन पूजा संपूर्णा ॥ २४ ॥

अथ पूर्णार्घ्य–छंदत्रोटक–सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी । तुममें जितने गुणहैं तितनी । कह

कौन सके मुखतें सबही । तिहि पूजतहूं गह अर्घ यही॥१॥ॐ ह्रीं श्रीऋषभ,अजित,सम्भव,अभिनन्दन,

सुमति,पद्म,सुपार्श्व,चन्द्रप्रभ,पुष्पदन्त,शीतल,श्रेयांस,वासुपूज्य,विमल,अनन्त,धर्म, शान्ति,कुन्थु, अर,

मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि,नेमि,पार्श्व,वर्द्धमान इति चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यःपूर्णार्घं निर्वपामाति स्वाहा ॥

अथ आशीर्वाद । कवित्त–ऋषभ देवको आदि, अंत श्रीवर्धमान जिनवर सुखकार। तिनके चरण कमल

को पूजे, जो प्राणी गुणमाल उचार ॥ ताके पुत्र मित्र धन यौवन, सुखसमाज गुण मिले अपार ।

सुर पद भोग भोग चक्रीन्हे, अनुक्रम लहै मोक्ष पद सार ॥ २ ॥ इत्याशीर्वादः ॥

अथ कविनामादि वर्णन ।

छंद मनहरण–काशीजी में काशीनाथ नन्नूजी अनंत राम, मूलचंद आदि सुराम आदि जानियो । सज्जन अनेक तहां धर्म चंदजीके नंद, वृंदावन अग्रवाल गोल गोत मानियों ॥ ता ने रचो पाठ पाय मन्नूलालको सहाय, बालबुद्धि अनुसार सुनो सरधानियो ॥ तामें भूलचूक होय ताहि शोध शुद्धकीजो, मोहि अलपज्ञजान क्षमाउर आनियो ॥ १ ॥

इति श्रीवर्त्तमान चतुर्विंशति जिनेन्द्राणां वृन्दावनकृता भाषा पूजा सम्पूर्णा